भगीरथ

जनवरी-दिसम्बर 2020

मूल्य: 20 रुपये

केन्द्रीय जल आयोग

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग

जल शक्ति मंत्रालय

1945 से देश की सेवा में

भगीरथ

संपादक मंडल

डॉ. समीर चटर्जी, मुख्य अभियंता (मानव संसाधन प्रबंधन)	—	अध्यक्ष
श्री योगेश पैथंकर, मुख्य अभियंता (परियोजना मूल्यांकन संगठन)	—	सदस्य
श्री अजय कुमार, निदेशक (नदी प्रबंधन समन्वय)	—	सदस्य
श्री एस. के. राजन, निदेशक (तकनीकी समन्वय)	—	सदस्य
श्री समीर कुमार झा, निदेशक (जल प्रणाली अभियांत्रिकी)	—	सदस्य
श्री भूपेन्द्र सिंह, निदेशक (जल योजना एवं परियोजना समन्वय)	—	सदस्य
श्री आर के शर्मा, उप निदेशक (अभिकल्प एवं अनुसंधान समन्वय)	—	सदस्य
श्री ए. के. मधोक, उप निदेशक (जल प्रणाली अभियांत्रिकी)	—	सदस्य
श्री शिव सुंदर सिंह, उप निदेशक (जल प्रणाली अभियांत्रिकी)	—	सदस्य सचिव

कार्यकारी संपादक

ए. के. मधोक

कार्यालयीन सहयोग

संदीप

दीपक कुमार

संपादकीय पत्र व्यवहार का पता – उप–निदेशक

केंद्रीय जल आयोग
जल प्रणाली अभियांत्रिकी निदेशालय
द्वितीय तल (द0), सेवा भवन, रामकृष्णपुरम्
नयी दिल्ली–110 066
दूरभाषः 011–29583520
ई-मेलः media-cwc@gov.in

प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार एवं आंकड़ों के लिए लेखक उत्तरदायी हैं- लेख की सामग्री से प्रकाशक व संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है-भगीरथ में प्रकाशित लेखों को पुनः किसी भी रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है, ऐसे उपयोग के समय भगीरथ पत्रिका का संदर्भ वांछनीय है-भगीरथ के संबंध में किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा एवं आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी.

मूल्य एक प्रति–20 रुपये, वार्षिक शुल्क–70 रुपये, द्विवार्षिक–130 रुपये, त्रैवार्षिक–200 रुपये राशि केवल डी डी ओ–2, सी डब्ल्यू सी के नाम से डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें.

इस अंक में

लेख का नाम	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
• भू–जल का पुनर्भरण और संरक्षण जरूरी है.	– डॉ. दिनेश मणि	4
• पृथ्वी	– श्री रामगोपाल राही लाखेरी	8
• संदेश	– माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार	11
• संदेश	– माननीय जल शक्ति मंत्री, भारत सरकार	14
• संदेश	– माननीय जल शक्ति और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री, भारत सरकार	15
• अपील	– सचिव (DoWR,RD&GR), जल शक्ति मंत्रालय	16
• अपील	– अध्यक्ष, केन्द्रीय जल आयोग	17
• केन्द्रीय जल आयोग (मुख्यालय) में हिन्दी पखवाड़ा, 2020 का आयोजन	– हिन्दी अनुभाग, केन्द्रीय जल आयोग	18
• केन्द्रीय जल आयोग – क्षेत्रीय कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा,	– हिन्दी अनुभाग, केन्द्रीय जल आयोग	21
• सूखती व मरती नदियां जिन्हें दोबारा जीवन मिला	– सी.ए. कार्तिक अग्रवाल एवं सी.ए. कुशिक अग्रवाल	29
• जलवायु और मानव स्वास्थ्य	– डॉ. दया शंकर त्रिपाठी	34
• पेड़ों को भी होता है दर्द	– डॉ. विनोद गुप्ता	37
• स्वच्छ जल स्वस्थ जीवन	– डॉ. दयानाथ सिंह ''शरद''	38
कविताएं		
• हिन्दी का 'परचम लहराएँ'	– श्री एस सी त्रिपाठी	43
• बादल काले–काले	– श्री मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	44
• हिन्दी	– श्री मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	45
• मौसम	– अर्चना शर्मा	46
• जल का संचय	– कमल सिंह चौहान	47
• निर्मल जल	– कमल सिंह चौहान	48
• जल प्रभात फेरी	– श्री कमलेश्वर प्रसाद त्रिपाठी	49
• पानी	– श्री कमलेश्वर प्रसाद त्रिपाठी	50
जल संसाधन संसद में		51

केन्द्रीय जल आयोग, नागपुर कार्यालय में
दिनांक 09.12.2020 को हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन
ऑनलाईन माध्यम से किया गया.

दिनांक 27.02.2020 को वड़ोदरा में संसदीय राजभाषा
समिति की दूसरी उप–समिति का निरीक्षण कार्यक्रम

भू–जल का पुनर्भरण और संरक्षण जरूरी है

डॉ. दिनेश मणि

प्राकृतिक रूप से रिसकर मृदा में समा जाने वाला जल तो अवमृदा में स्वतः ही सुरक्षित हो जाता है और भू–जल के रूप में उपलब्ध रहता है. विगत दशकों में भू–जल के दोहन पर बहुत जोर दिया गया है. जमीन के अन्दर वाले पानी के अत्यधिक दोहन ने ही वास्तविक रूप में जल संकट को जन्म दिया है. तर्कसंगत तो यही है कि जमीन से उतना ही पानी निकाला जाना चाहिए जिसकी पूर्ति वर्षा के जल से हो सके. उससे अधिक पानी निकालने का अर्थ है कि भावी पीढ़ियों को पानी के अकाल की तरफ ले जाना, भू–जल की वर्षा के पानी के प्रतिपूर्ति के मार्ग में आज हमने कई कृत्रिम अवरोध पैदा कर दिये हैं. अधिकांश क्षेत्रों में वनों और वनस्पतियों का विनाश इसका एक प्रमुख कारण है.

अतिदोहन और जल–स्तर में गिरावट की समस्या के अतिरिक्त भी एक समस्या है. प्रदूषण से भू–जल की गुणवत्ता में गिरावट के कारण पानी की उपलब्धता में कमी हो सकती है. अतिदोहन के कारण होने वाली कमी की तुलना में भरपाई होना कहीं ज्यादा मुश्किल है. कृषि व अन्य क्षेत्रों के अकेन्द्रित प्रदूषण स्रोत एवं केन्द्रित प्रदूषण स्रोत मिलकर एक प्रमुख जल प्रबंधन चुनौती प्रस्तुत करते हैं इसका सबसे अच्छा उदाहरण बांग्लादेश एवं पश्चिम बंगाल में भू–जल से पैदा होने वाली व्यापक आर्सेनिक विषाक्तता है. गंगा–मेघना–ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र के जलोढ़ डेल्टाई अवसाद से प्राप्त भू–जल में आर्सेनिक प्राकृतिक रूप से पाया जाता है.

विश्व के लगभग सभी छोटे–बड़े देश जल–उपलब्धता की बड़ी चुनौती का सामना कर रहे हैं इसी चुनौती को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने सतत विकास लक्ष्य–2030 (एस.डी.जी.–2030) तय किया है, जिसमें शुद्ध पेयजल की उपलब्धता और स्वच्छता का सवाल सबसे ऊपर है. शुद्ध जल और शुद्ध परिवेश के बिना न तो हम किसी तरह के विकास का दावा कर सकते हैं और न ही अपने विकास की दिशा को सही मान सकते हैं. इसलिए आज न सिर्फ पर्यावरण–प्रेमी, बल्कि समाज–विज्ञानी भी जल और स्वच्छता को मानवाधिकार से जोड़कर देखते हैं.

एक समस्या आर्सेनिक प्रभावित जल पीने से उत्पन्न खतरे से संबंधित है. पेयजल की अनुपलब्धता देश के लिए वाकई एक बड़ी चुनौती है. देश में प्रदूषण के बढ़ते प्रकोप का असर पेयजल की गुणवत्ता पर भी पड़ रहा है जिसकी वजह से देश की 47.41 करोड़ आबादी फ्लोराइड, आर्सेनिक, लौह–तत्व और नाइट्रेट सहित अन्य लवण एवं भारी धातुओं के मिश्रण वाला पानी पीने को मजबूर हैं. पानी में फ्लोराइड की अधिकता से सांस–संबंधी बीमारियाँ, लौह एवं लवणयुक्त पानी से ऑस्टियोपोरोसिस, अर्थराइटिस और आर्सेनिक–युक्त दूषित जल से कैंसर– जैसी बीमारियों का खतरा होता है. पेयजल की उपलब्धता और इसकी गुणवत्ता से जुड़े सरकार के ऑकड़े बताते हैं कि सेहत के लिए खतरनाक रासायनिक तत्वों की मिलावट वाले दूषित पानी की उपलब्धता से सर्वाधिक प्रभावित राज्यों में राजस्थान, पश्चिम बंगाल और असम शीर्ष पर है.

पर्यावरण–मंत्रालय की मदद से केंद्रीय एजेंसी 'एकीकृत प्रबंधन सूचना प्रणाली' (आई.एम.आई.एस.) द्वारा देश में पानी की गुणवत्ता को लेकर तौर किए गए आँकड़ों के मुताबिक राजस्थान की सर्वाधिक 19,657 बस्तियाँ और इनमें रहने वाले 77.7 लाख लोग दूषित जल से प्रभावित हैं. आई.एम.आई.एस. द्वारा पेयजल एवं स्वच्छता विभाग को सौंपे गए ऑकड़ों के मुताबिक पूरे देश में 70,736 बस्तियाँ फ्लोराइड, आर्सेनिक, लौह–तत्व और नाइट्रेट सहित अन्य लवण एवं भारी धातुओं के मिश्रण वाले दूषित जल से प्रभावित हैं. इस पानी की उपलब्धता के दायरे में 47.41 करोड़ आबादी आ गई है.

राजस्थान में फ्लोराइड, नाइट्रेट और लवण–युक्त भूजल का प्रकोप सबसे ज्यादा है. राज्य में 5,996 बस्तियों के 40.94 लाख लोग फ्लोराइड के, 12,606 बस्तियों में रहने वाले 28.53 लाख लोग लवण–युक्त पानी के और 1,050 बस्तियों के 8.18 लाख लोग नाइट्रेट–मिश्रित पानी के इस्तेमाल को विवश हैं. आर्सेनिक–युक्त पानी की उपलब्धता से असम सर्वाधिक प्रभावित राज्य है. राज्य की 4,514 बस्तियों में रहने वाली 17 लाख की आबादी को आर्सेनिक–युक्त पानी मिल रहा है.

पश्चिम बंगाल उपर्युक्त सभी हानिकारक तत्वों के मिश्रण वाले पानी की उपलब्धता के मामले में दूसरा सबसे प्रभावित राज्य है. राज्य की 17,650 बस्तियों के 1.70 करोड़ लोग इस समस्या के घेरे में आ गए हैं. दूषित जल की उपलब्धता से प्रभावित आबादी के मामले में पश्चिम बंगाल अव्वल है, जबकि गोवा, गुजरात और हिमाचल–प्रदेश के अलावा पूर्वोत्तर राज्यों में मणिपुर, मिजोरम तथा सिक्किम एवं केंद्र शासित क्षेत्र पुदुचेरी में एक भी बस्ती किसी भी प्रकार के दूषित जल से प्रभावित नहीं है.

यूनिसेफ के ऑकड़ों के अनुसार, दुनियाभर में 70 से अधिक देशों में 14 करोड़ से अधिक की आबादी आर्सेनिक मिले दूषित पानी पीने से प्रभावित हैं और इनमें से ज्यादातर एशिया में रहते हैं. इससे बच्चों में अपंगता तक का खतरा रहता है एवं वयस्कों को त्वचा–संबंधी विभिन्न रोगों से लेकर कैंसर, यहॉ तक कि मौत का भी खतरा रहता है. सबसे बड़ी बात यह है कि इससे होने वाली बीमारियों का इलाज नहीं है, सिर्फ इस पानी का सेवन रोकना होगा.

भू–जल का स्तर जिस तरह से गिरता जा रहा है, वह चिंता का विषय है. एक ओर भू–जल का स्तर घटता जा रहा है, वहीं दूसरी ओर समुद्रों का जल–स्तर जितनी तेजी से बढ़ रहा है, वह मनुष्य के लिए घातक साबित हो सकता है. वैश्विक दृष्टि से समुद्री जल–स्तर में पिछले 100 सालों में 8 इंच की बढ़ोत्तरी हुई है और अगर यह बढ़ोत्तरी ऐसे ही होती रही तो अगले तीस–चालीस सालों में किरिबानी, मार्शल आइलैंड, मालदीव तथा तुबालु जैसे आइलैंड्स (द्वीपों) का अस्तित्व एक दिन समुद्र में विलीन हो सकता है. पृथ्वी पर पानी का संतुलन वर्षा और वाष्पीकरण द्वारा संभव है. पृथ्वी का तीन–चौथाई हिस्सा पानी से घिरा है. परंतु स्वच्छ जल या कहें कि मनुष्य के इस्तेमाल योग्य पानी बहुत कम है.

जलमंडल में लगभग 1,46,00,00,000 घन किलोमीटर पानी है, इसमें से 97.3 प्रतिशत महासागरों और अंतरदेशीय सागरों में हैं. शेष 2.7 प्रतिशत हिम नदों और बर्फ टोपों, मीठे जल की झीलों, नदियों और भूमिगत जल के रूप में पाया जाता है. विश्व में कुल 5 महासागर हैं तथा इनमें से हिंद महासागर भारत की सीमा से लगा है. महासागर पृथ्वी के कुल धरातलीय क्षेत्रफल के 70.8 प्रतिशत भाग को घेरे हुए हैं और इनमें 144.5 करोड़ घन किलोमीटर पानी है. प्रशांत महासागर पृथ्वी के क्षेत्रफल के 35.25 प्रतिशत भाग पर फैला है. इसकी सर्वाधिक चौड़ाई 16,880 किलोमीटर और इसकी सर्वाधिक गहराई 11.516 मीटर (मिंडानाओ द्वीप) है. अटलांटिक महासागर पृथ्वी के क्षेत्रफल के 20.9

प्रतिशत भाग को घेरे हैं. इसकी सर्वाधिक गहराई 8,381 मीटर (मिलवाकी द्वीप) है.

विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महासागर हिंद महासागर भारत में कन्याकुमारी से दक्षिणी ध्रुव अंटार्कटिका तक फैला है. यह पृथ्वी के कुल धरातलीय क्षेत्रफल के 14.65 प्रतिशत भाग में हैं, इसकी सर्वाधिक गहराई 7,725 मीटर (प्लैनेट द्वीप) है.

प्रायः भूजल की गुणवत्ता संबंधी समस्याओं की पहचान कोई दुर्घटना होने या इससे सम्बन्धित तथ्यों के मिलने के बाद ही हो पाती है. आर्सेनिक विषाक्तता का प्रकरण इसका उदाहरण है. जब इस विषाक्तता के प्रकरण व्यापक स्तर पर सामने आने लगे तभी इसे एक बड़ी समस्या के रूप में स्वीकार किया गया.

गुणवत्ता और परिमाण सम्बन्धी समस्याओं की व्याख्या करने में एक प्रमुख चुनौती संसाधन आधार एवं गतिशीलता को समझने की है. भूजल विशेषज्ञों सहित बहुत सारे लोगों की यह धारणा है कि बारिश के जरिए भूजल की तीव्रता से भरपाई हो जाती है और वह पृथ्वी के अन्दर सरलता से बहता रहता है. साथ ही इसकी गुणवत्ता भी एक समान बनी रहती है. परन्तु वास्तव में चट्टान निर्माण की जटिल प्रक्रिया और पुनर्भरण की भिन्न–भिन्न दरों के चलते भूजल की गतिशीलता कहीं ज्यादा पेचीदा होती है प्रकारांतर से यह पेचीदगी संसाधनों की स्थिति की समझ को और ज्यादा जटिल बना देती है.

इसके परिणामस्वरूप भूजल का अतिदोहन खनिज तेल जैसे संसाधनों के निष्कर्षण जैसा हो जाता है जिनकी भरपाई नहीं हो सकती. तथ्यों के मिलने तक विशेषज्ञों को भी अपरिवर्तनीय समस्याओं की उत्पत्ति का पता लगाने में प्रायः कठिनाई होती है. इस प्रकार अनिश्चितताओं से निपटना भूजल प्रबंधन का एक मुख्य अंग है.

भूजल के लिए होने वाली प्रतिस्पर्धा के समाधान के लिए तकनीकी विकल्प सीमित है. अधिकतर प्रकरणों में अतिदोहन से प्रभावित समूह तथा समुदाय भूजल भण्डारों के पुनर्भरण की वकालत करते हैं परन्तु सम्पूर्ण भारत में इस विकल्प की व्यावहारिकता सीमित ही दिखती है. उदाहरण के लिए गुजरात के अधिकांश क्षेत्रों से सम्बन्धित आंकलन बताते हैं कि पुनर्भरण में वृद्धि अतिदोहन को मात्र 10 प्रतिशत तक कम कर पाती हैं, जबकि बहुत से अन्य क्षेत्रों में अप्रयुक्त सतही जल बहुत कम मात्रा में उपलब्ध है जिसका इस्तेमाल पुनर्भरण के लिए किया जा सकता है और जहां जल उपलब्ध भी है वहां वर्षा का समय और वितरण जलभण्डारों की पुनर्भरण क्षमता को सीमित कर देते हैं. पुनर्भरण एक धीमी प्रक्रिया है. इसकी गति का निर्धारण मिट्टी व उसके नीचे की संरचनाओं की जल अवशोषण की दर द्वारा तय होता है. इसके विपरीत वर्षा का स्वरूप प्रायः मौसमी होता है और यह थोड़े समय के लिए तेजी से होती है. इसलिए इसके बहुत कम भाग का भण्डारण पुनर्भरण के लिए किया जा सकता है.

जल भण्डारों के पुनर्भरण की तकनीकी सीमाओं के इतर भूजल संसाधनों के लिए होने वाली प्रतिस्पर्धा के निराकरण में निहित सामाजिक चुनौतियों को समझने के लिए इन धारणाओं को समझना जरूरी है– भूजल एक ऐसी कड़ी है जो कृषि, पर्यावरणीय व आर्थिक–तंत्रों को जोड़ती है और इनको कुछ जगहों पर परस्पर निर्भर बनाती है. उदाहरण के लिए पर्यावरणीय उपयोगिताएं, गरीबों के लिए पानी की उपलब्धता, सूखे के समय खाद्य सुरक्षा की स्थिति एवं विभिन्न फसलों की आर्थिक व्यावहारिकता –ये तमाम चीजें एक विशेष जलस्तर तथा भूजल गुणवत्ता पर निर्भर हो सकती है और ये स्थितियां प्रायः जल के इस्तेमाल के तरीकों पर निर्भर करती हैं जैसे कि अदक्ष सतही सिंचाई–तंत्र के रिसाव के कारण होने वाला पुनर्भरण प्रायः उच्च भूजल स्तर को बनाए रखने में मददगार साबित होता है और यह भूजल स्तर नदियों के आधार प्रवाह का निर्माण तथा

गरीब समुदाय के लिए भूजल की उपलब्धता सुनिश्चित करता है. व्यक्तिगत स्तर पर उपभोक्ता भूजल की सिर्फ दोहन आधारित उपयोगिता को ही प्राप्त कर सकते हैं जैसे जमीन से पानी निकालना एवं किसी विशेष उद्देश्य के लिए उसका उपयोग करना परन्तु जब भूजल को जल भण्डारों में ही रहने दिया जाता है तब दोहन आधारित उपयोगिताएं भूजल द्वारा प्रदत्त पर्यावरणीय सेवाओं, सूखे के लिए संरक्षित भंडार एवं अन्य सेवाओं को प्रदर्शित नहीं करती हैं. ये सभी सेवाएं सार्वजनिक सम्पत्ति होती है. उपभोक्ता व्यक्तिगत स्तर पर इनसे लाभ उठा सकते हैं लेकिन उसकी स्थिति सभी उपभोक्ताओं की संयुक्त कार्यवाही पर निर्भर करती हैं जल भण्डारों के अतिदोहन या उसके प्रदूषण में अपनी भूमिका को नजरंदाज कर लोग बहुत आर्थिक लाभ उठाते हैं लेकिन नुकसान यह होता है कि जब भूजल को जल बाजार से बेचा जाता है या मानक आर्थिक तकनीकों के द्वारा इसका मूल्यांकन किया जाता है तो इसको बहुत कम आंका जाता है.

अधिकतर प्रकरणों में भूजल का प्रबंधन स्थानीय स्तर पर नहीं किया जा सकता है. भूजल भण्डारों का विस्तार क्षेत्र दस से लेकर हजारों गांवों तक हो सकता है जिसके परिणामस्वरूप जल भण्डारों की गतिशीलता व्यक्तिगत या ग्राम स्तर पर होने वाली कार्यवाहियों के भूजल पर पड़ने वाले प्रभावों को सीमित कर देती है. जबकि दूसरी तरफ शासकीय एजेन्सियों द्वारा लागू की जाने वाली प्रबंधकीय रणनीति को इस तरह ढालना कठिन होता है ताकि भूजल की परिस्थितियों व उपयोगों में स्थानीय या क्षेत्रीय स्तर पर होने वाले बदलावों को जाना जा सके.

भूजल एक छुपा हुआ संसाधन है जिसके बारे में लोगों की समझ काफी कम है लेकिन विभिन्न सामाजिक आर्थिक व पर्यावरणीय सेवाओं के लिए यह बहुत जरूरी है. प्रदूषण एवं जलस्तर में गिरावट भूजल पर निर्भर पर्यावरणीय, घरेलू, कृषकीय एवं औद्योगिक उपयोगों के लिए अस्तित्व का संकट बन सकती है. जैसे–जैसे भूजल की मांग बढ़ेगी और इसके दीर्घकालीन दोहन की सीमाएं स्पष्ट होने लगेंगी, भूजल के लिए कृषकों व दूसरे उपयोगकर्ताओं के बीच प्रतिस्पर्धा तेजी से बढ़ती जाएगीं. इससे लोगों में प्रतिस्पर्धात्मक दोहन की शुरूआत हो सकती हैं. प्रत्येक व्यक्ति भूजल संसाधनों के खत्म होने से पहले उससे लाभ प्राप्त करने के लिए जितना सम्भव होगा उतना भूजल निकलने लगेगा इसके परिणाम भूजल की बढ़ती मांग और घटती उपलब्धता के अन्तहीन चक्र के रूप में सामने आ सकते हैं. अतः भूजल के दीर्घजीवी प्रबंधन के लिए प्रतिस्पर्धा के महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे का समाधान करना जरूरी हैं.

35/3, जवाहर लाल
नेहरू रोड
जार्ज टाउन,
इलाहाबाद– 211002

*****

पानी का सदुपयोग करो,
मत इसका दुरूपयोग करो.

पृथ्वी

– रामगोपालराही लाखेरी

धरती कैसे बनी, पृथ्वी की उत्पत्ति कैसे हुई, यह एक जटिल मगर जिज्ञासा युक्त प्रश्न है, पृथ्वी के जन्म के बारे में उत्सुकता होती ही होती है, पृथ्वी संदर्भो के बारे में बात करें तो धार्मिक उल्लेखों में पृथ्वी के जन्म के बारे में प्राचीन लोगों की धारणा थी कि धरती को भगवान ने बनाया, फिर धरती पर पेड–पौधे लगाए, जीव–जंतुओं तथा मनुष्यों को बनाया. पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह बात सही नहीं है. इस बारे में हम पढ़ते आए हैं कि धरती सूरज से निकला हुआ आग का गोला था. धरती पहले बहुत गर्म थी, फिर ध ीरे–धीरे ठंडी हुई, बाद में धरती पर जीव जंतुओं की उत्पत्ति हुई.

समझा जाता है आज से लगभग 5 बिलियन साल पहले अंतरिक्ष में गैसों के मिश्रण से एक जोरदार भयंकर विस्फोट जैसा धमाका हुआ. माना जाता है कि इस धमाके से एक बहुत बड़ा आग का गोला बना जिसे हम सूर्य के नाम से जानते हैं. उल्लेखनीय है कि इस धमाके के कारण विपुल धूल के कण चहुँ ओर फैल गए.

गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण यह धूल के कण आपस में जुड़ जुड़ के बड़े–बड़े पत्थरों के टुकड़े बन गए फिर चट्टानों में बदल गए.

उल्लेखनीय है कि यह टुकड़े भी धीरे–धीरे गुरुत्वाकर्षण के शक्ति के कारण आपस में टकरा–टकरा कर एक दूसरे के साथ जुड़ने लगे, कहा जाता है कि इस तरह सौरमंडल का गठन हुआ. माना जाता है कि कई मिलियन सालों तक गुरुत्वाकर्षण शक्ति से पत्थर चट्टानें धरती बनने के लिए जुड़ती रही, माना जाता है कि उस समय और भी ग्रह सूर्य के चक्कर लगा रहे थे. चट्टानों के आपस में टकराने से धरती गर्म आग के गोले के रूप में तैयार होती रही, चट्टानें जुड़ती रही, धरती अपना रूप लेती रही. उस समय गर्म धरती का तापमान 12 सौ डिग्री सेल्सियस था.

चट्टानों के आपस में टकराने के कारण आग के गोले के रूप में तैयार होती रही धरती. समझा जाता है लगभग 4.54 बिलियन साल पहले धरती का ताप 12 सौ डिग्री सेल्सियस था उस समय धरती पर कुछ था तो उबलती चट्टानें, कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन और जल वाष्प. समझा जाता है तभी प्राकृतिक रूप से ऐसा वातावरण बना जिसमें हम चंद पलों में ही घुटन से मर जाते हैं.

उस समय कोई भी सख्त सतह नहीं थी. कुछ था तो बस खत्म न होने वाला उबलता हुआ लावा था. समझा जाता है आगे बढ़ते प्रकृति के इस विचित्र स्वरूप में प्राकृतिक प्रक्रिया के चलते धीरे–धीरे धरती में बदलाव आते रहे. प्रकृति की अपनी कहानी विचित्रता की कहानी है. कहा जाता है कि उल्का पिंडों से धरती पर 200 मिलियन सालों तक गिरते रहे पानी से धरती पर काफी पानी इकट्ठा हो गया. धरती पर पानी इकट्ठा होने से धरती की ऊपरी सतह ठंडी हो गई, चट्टानें सख्त होने लगी. धरती के अंदर लावा उसी रूप में

मौजूद था. धरती का तापमान 70, 80 डिग्री सेल्सियस हो चुका था, धरती की सतह भी सख्त हो चुकी थी. धरती पर आज जो पानी है कई बिलियन साल पहले भी था. धरती अपना रूप ले चुकी थी. धरती हमारी सबकी माता है, यह हमें सभी कुछ देती है, पालती है. समझा जाता है कि विकास और औद्योगिकीकरण के चलते धरती को काफी नुकसान पहुंचाया जा रहा है.

उल्लेखनीय है कि पृथ्वी के जन्म की एक कहानी और है. बताया जाता है धरती का जन्म भगवान से हुआ. भगवान ने धरती को बनाया. आगे चलकर धरती पर प्रथम पुरुष मनु के वंश में राजा बेन के बाद उनके पुत्र पृथु हुए, यह सारी धरती के एकमात्र राजा थे, राजा पृथु ने उस समय की उबड़–खाबड़ धरती को अपने अथक प्रयासों से इस धरती को फसल योग्य बनाया जिस पर अन्न फसलें पैदा हो सके, धरती को समतल बनाया, बाद में राजा पृथु के नाम पर इस धरती का नाम पृथ्वी हो गया.

उल्लेखनीय है कि धरती, पृथ्वी को और भी नामों से पुकारा जाता है धरा, इला, मेदिनी, भू, धरणी, भूमि, मही अचल आदि नामों से भी धरती को पुकारा जाता है. वस्तुतः धरती पृथ्वी को कई कारण व कई तरह से नुकसान हो रहा है, इसी के तदन्तर माना जाता है पृथ्वी इस समय भयानक बदलाव से गुजर रही है. कहा जाता है कि धरती से कई प्रजातियां विलुप्त सी है, लुप्त हो रही है. इसके कारण धरती को इससे क्षति हो रही है, समझा जाता है कि पृथ्वी के लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर दबाव है. असंतुलित खेती हो रही है, खेती की जमीन रासायनिक छिड़कावों से बिगड़ती जा रही है. दुनिया भर में कृषि भूमि बेकार हो रही है, ऐसे में मानवीय सवाल उठता है भावी पीढ़ियाँ अपना पेट कैसे भरेगी ? दुनिया में जनसंख्या 2 अरब से 7 अरब हो गई. इसी के साथ धरती खनन, ईंधन, औद्योगिक क्रांति के संसाधनों में अधिक से अधिक खर्च हो रहा है. ऐसी बढ़ती विकास दर धरती माता को खत्म कर रही है, विषैला कचरा बढ़ रहा है, वातावरण में घुली गैसों ने धरती का रुप बिगाड़ दिया है. धरती की सबसे बड़ी पूंजी वन वनस्पति होती है. पेड़–पौधे, पशु, जीव–जंतु यह सभी धरती के अपने चहेते हैं, जीव–जंगल खत्म हो रहे हैं, पेड़ नष्ट हो रहे हैं, यह हमें ऑक्सीजन देते हैं, खेती में मिट्टी का कटाव रोकते हैं.

वनों का कम होना धरती की क्षमता का कम होना है, औद्योगिक क्रांति से खनिज ईंधन का उपयोग तेजी से बड़ा और बढ़ता ही जा रहा है. खनिज के जलने से कार्बन डाइऑक्साइड निकलती है. वायु प्रदूषण अधिक बढ़ रहा है. यह ग्रीन हाउस गैस है जिससे अनावश्यक गर्मी बढ़ रही है. इस वजह से मौसम में भी बदलाव देखे जा सकते हैं. कहीं धरती का अस्तित्व खत्म हो जाए समझा जाता है मानव समाज ने धरती को अब तक बहुत घायल कर दिया है. यही स्थिति रही तो सृष्टि से मानव प्रजाति और उसकी संस्कृति निश्चित रूप से खत्म हो जाएगी. पिछले 200 वर्षों में हमने जीवाश्म ईंधन का इस कदर दोहन किया कि ऊर्जा देने वाले इस द्रव्य के अकूत भंडार खोखले हो गए. अब प्रकृति में संतुलित संतुलन स्थापित करने हेतु एक मात्र विकल्प यह है कि हमने इस धरती को जो घाव दिए हैं उनकी भरपाई कर पृथ्वी के आरोग्य को बढ़ाया जाए, पृथ्वी की आरोग्यता को बढ़ाया जाए और धरती माता को (ग्रह पृथ्वी को) चिरायु बनाया जाए. इसके लिए हमें प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर धरती की रक्षा करनी होगी. धरती हमारी मां है, उसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है, वस्तुतः पारिस्थितिक प्रक्रिया तथा धरती की सीमा का उल्लंघन हुआ है. अभी धरती मिट्टी और मानवता दोनों संकट में है. जीवाश्म ईंधन का कोई विकल्प नहीं, ग्लोबल वार्मिंग से जमीन बंजर और फसलें खराब हो रही है.

पृथ्वी हमसे कुछ नहीं लेती, देती ही देती है. पृथ्वी पूरे ब्रह्मांड में जीवन वाला जहां, जीव व पानी

दोनों है, एकमात्र ज्ञात ग्रह है. हमें धरती को बचाने के लिए पेड़ लगाने होंगे. प्राकृतिक वनस्पति, पानी एवं प्राकृतिक संसाधन आदि की रक्षा कर पर्यावरण व ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित कर हर संभव प्रयास कर पृथ्वी पर बढ़ रहे दुष्प्रभावों से पृथ्वी को बचाना होगा. वन–जंगल, पेड–पौधे, धरती प्राकृतिक संपदा है. वृक्ष व पेड़ को धरती की रक्षा के लिए प्रचुर मात्रा में लगाना होगा तथा पृथ्वी से निकल रहे, निकाले जा रहे खनिज, कोयला, पत्थर, तेल इन्हें संतुलित रूप से निकाल बचाना चाहिए.

उल्लेखनीय है कि पृथ्वी पूरे ब्रह्मांड में एक ऐसा ग्रह है जहां जीवन है, जहां सबसे अधिक प्राकृतिक संसाधन, ऑक्सीजन, पानी गुरुत्वाकर्षण का संयोजन पाया जाता है. ग्लोबल वार्मिंग, वायु प्रदूषण को कम करने के लिए पेड़ लगाना चाहिए. धरती को विनाश से बचाने के लिए सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए. पृथ्वी ब्रह्मांड में सबसे अनमोल वस्तु है जहाँ जीवन और जीवन के लिए ऑक्सीजन और पानी दोनों मिलते है.पृथ्वी में पाए जाने वाले संसाधन अथवा खनिज अधिक निकाले जाने से अधिक दोहन, पृथ्वी का संतुलन बिगड़ रहा है. पृथ्वी के अनुकूल वातावरण में कमी आई है. पृथ्वी पर संतुलन के लिए जंगल–जीव दोनों जरूरी है. इनकी रक्षा करना जरूरी है. पृथ्वी पर बढ़ रहे नकारात्मक प्रभाव को रोका जाना चाहिए. वस्तुतः मानव के स्वार्थ से धरती बर्बाद हो रही है. पृथ्वी को बचाना, धरती की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है. पृथ्वी है जीवन का मूल कथ्य–सत्य न जाए भूल. पेड़ देश का दिल होते हैं, शहर के पार्क फेफड़े होते हैं. पेड़ लगाओ –पृथ्वी बचाओ–जीवन बचाओ.

वार्ड–4
पोस्ट लाखेरी
जिला–बूंदी (राज)
पिन 323 615

*****

जल है जीवन की आस,
बचा रहे ये हर वक्त करो प्रयास.
आओ सब मिलकर कसम खाएं,
बूंद–बूंद पानी का मिलकर बचाएं.
पानी है अमूल्य इसे बचाने में,
आपका सहयोग होगा बहुमूल्य.
जल न रहे जगत में तो सबका जीवन बेकार,
जल है इस दुनिया का आधार.

अमित शाह,
गृह मंत्री.
भारत सरकार,

सत्यमेव जयते

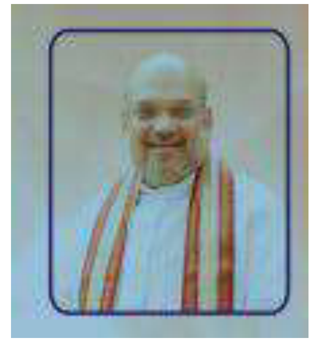

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर,, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ देना चाहता हूँ.

पूरी दुनिया में हमारा देश,, एक अलग प्रकार का देश है. कई प्रकार की संस्कृतियां,, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहाँ पर दिखाई पड़ता है. यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है. हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं. अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है. सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है. हिन्दी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसकी देश के कई नेताओं ने समय–समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है. हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है. हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं. हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है. हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है, हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है वही लिखा जाता है. हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया.

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है. हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी, बल देने का प्रयास किया है. हर राज्य की भाषा को, हिंदी ताकत देती है. हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है. 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिन्दी' व लिपि 'देवनागरी' होगी. अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहाँ आवश्यक है या वांछनीय हो, वहाँ उसके शब्द–भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिन्दी की समृद्धि सुनिश्चत की जानी है.

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए. भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कायौलयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ–साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले.

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन–संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है. वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिन्दी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है. इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है. बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें.

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती. राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिस प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है. प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई–टूल्स को सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है. 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा हिंदी निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ–साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके. इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह ई–महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं. राजभाषा विभाग द्वारा ई–महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं. राजभाषा विभाग द्वारा ई–सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है.

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह–पत्रिकाओं का विशेष महत्व है. राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई–पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई–पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे. आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई–टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें.

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुजर रही है. प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है. समय–समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया. कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत–बहुत बधाई देता हूं. इसके साथ–साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही. मैं आशा करता हूं कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिन्दी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे. ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे, राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीकी का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई–निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया. राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केन्द्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कांफ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है.

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें. हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए.

आइए! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे. इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूँ कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए. में अभिभावकों को भी कहना चाहता हूँ–अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं. मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पुरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान–विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी.

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ.'

भारत माता की जय !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020

हस्ता/–
(अमित शाह)

गजेन्द्र सिंह शेखावत

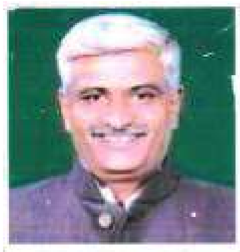

जल शक्ति मंत्री
भारत सरकार

संदेश

'हिंदी दिवस' के शुभ अवसर पर मैं आप सभी को अपनी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं.

हमें भारतीय संविधान द्वारा हिन्दी को बढ़ावा देने और उसके प्रचार–प्रसार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है. हमारा देश विविध बोलियों एवं भाषाओं की संगम स्थली है. भाषा न केवल संस्कृति का अभिन्न अंग है, बल्कि कुंजी भी है. देश में सांस्कृतिक समन्वय के जो प्रयास हो रहे हैं उसमें हिन्दी भाषा का विशेष योगदान है. हिन्दी अपनी आंतरिक ऊर्जा, अपनी सरलता, सहजता, बोध गम्यता और समन्वय की भावना से निरंतर आगे बढ़ते हुए पूरे देश में संपर्क सूत्र बन गई है.

इस बदलते युग में, सरकारी कार्यालयों के काम करने की प्रक्रिया व ढंग बदल रहा है. आज अधिकांश कार्य कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा हो रहे हैं. अतः कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बनाए रखने और बढ़ावा देने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न कम्प्यूटर सिस्टमों और सॉफ्टवेयरों में हिंदी में कार्य करने की पूर्ण सुविधा हो, नहीं तो बढ़ते हुए कम्प्यूटरीकरण में हिन्दी की प्रगति में रूकावट पहुँचेगी.

राजभाषा के रूप में हिन्दी स्वीकारने का मुख्य उद्देश्य है कि जनता का काम जनता की भाषा में सम्पन्न हो, उसमें कठिन भाषा शैली के लिए कोई स्थान नहीं होता. सरकारी कामकाज में हिन्दी की प्रगति एवं प्रचार–प्रसार के लिए आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए. कार्यालय की भाषा में कठिन शब्दों का प्रयोग करके उसे बोझिल न बनाएं.

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग में उत्साह के साथ ''हिन्दी पखवाड़ा'' समारोह आयोजित किया जा रहा है. इस अवसर पर हम संकल्प लें कि हम अपने कामकाज में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति अपनी निष्ठा और समर्पण भावना का परिचय देंगे.

हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ.

हस्ता/–
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

नई दिल्ली,
11 सितंबर, 2020

रतन लाल कटारिया,

जल शक्ति
और सामाजिक न्याय एवं
अधिकारिता राज्य मंत्री
भारत सरकार

संदेश

प्रिय साथियो !

''हिंदी दिवस'' के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ.

भारत के संविधान के अनुसार, संघ की राजभाषा हिन्दी है. इसलिए हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करें. राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए हमें राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए. वास्तव में हिन्दी में काम करने के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा कि भाषा को सहज एवं सरल रूप से लिखा जाए.

सरकारी कामकाज में पिछले कई वर्षों से हिन्दी का निरन्तर विकास हुआ है और कार्यालयों में हिन्दी को सुगम बनाने के लिए अनेक सुविधाएँ उपलब्ध हैं. सूचना क्रान्ति के इस युग में अपने विकास को कायम रखने के लिए हिन्दी को भी नई तकनीकों से लैस करना होगा और आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाना होगा. हिन्दी भाषा का प्रयोग करने वालों तक इसका पूरा लाभ पहुँचाने के लिए यह आवश्यक है कि कम्प्यूटर पर हिन्दी प्रयोग के लिए यूनिकोड का प्रयोग किया जाए. साथ ही यह भी जरूरी है कि हम कम्प्यूटरों पर उपलब्ध आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें.

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय में 14 सितम्बर, 2020 से 28 सितम्बर, 2020 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है. मुझे विश्वास है कि सभी अधिकारी और कर्मचारी अपने कामकाज में सहज–सरल हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति निष्ठा और समर्पण का पूर्ण परिचय देंगे. हिन्दी में काम करने की भावना केवल ''हिन्दी पखवाड़े'' तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य किया जाना चाहिए.

''हिन्दी पखवाड़े'' के शुभ अवसर पर मैं आप सभी को बधाई देते हुए ''हिन्दी पखवाड़े'' की सफलता की कामना करता हूँ.

हस्ता/–
(रतन लाल कटारिया)

नई दिल्ली,
11 सितंबर, 2020

यू. पी. सिंह, आई. ए. एस
सचिव

भारत सरकार
जल भाक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास
और गंगा संरक्षण विभाग
श्रम भाक्ति भवन,
रफी मार्ग, नई दिल्ली–110001

अपील

हिन्दी देश की भावनात्मक एकता की कड़ी है. हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो हर व्यक्ति को एक सूत्र में बांध सकती है. किसी भी समाज, राष्ट्र और सभ्यता की पहचान उसकी अपनी भाषा से होती है. भाषा विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम होती है. हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना एक राष्ट्रीय कार्य है.

हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाने के संवैधानिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि विभाग के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच हिन्दी में कामकाज करने की इच्छा शक्ति स्वतः जागृत हो. इस संबंध में कार्यालय के उच्च अधिकारी पहल कर कार्यालय में सकारात्मक माहौल तैयार कर सकते हैं. देश भी अपनी भाषा से ही महान एवं शक्तिशाली बनता है.

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय में 14 सितम्बर, 2020 से 28 सितम्बर, 2020 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है. पिछले कई वर्षों से हम 'हिन्दी पखवाड़े' के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजित करते आ रहे हैं. लेकिन इस वर्ष कोविड–19 महामारी के कारण सिर्फ दो प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही है. मुझे आशा है कि विभाग के अधिक से अधिक अधिकारी और कर्मचारी इसमें भाग लेंगे और यह आयोजन हिन्दी काम करने के लिए आप सभी को उत्साह और प्रेरणा प्रदान करेगा. हिन्दी में काम करने की भावना केवल हिन्दी पखवाड़े तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य किया जाना चाहिए ताकि हम अपने संवैधानिक दायित्वों को निभा सकें.

इस अवसर पर, मैं आप सभी को बधाई देता हूँ और **'हिन्दी पखवाड़े'** के सफल आयोजन की कामना करता हूँ.

हस्ता/–
(यू पी सिंह)

नई दिल्ली
11 सितंबर, 2020

राजेन्द्र कुमार जैन
अध्यक्ष, केंद्रीय जल आयोग

सेवा भवन, आर के पुरम, नई दिल्ली
दिनांकः 01 सितम्बर, 2020

अपील

प्रिय साथियों,

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं.

आपको विदित होगा कि देश की एकता में हिन्दी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया था कि स्वतंत्र भारत की राजभाषा, देवनागरी में लिखी हिन्दी होगी. इस महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक निर्णय की पावन स्मृति में हम प्रति वर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाते आ रहे हैं.

केन्द्रीय जल आयोग और इसके नियंत्रणाधीन क्षेत्रीय कार्यालयों में, हिंदी के प्रयोग में निरंतर वृद्धि हुई है, परंतु सरकारी कार्यों में हिंदी को बढ़ावा देकर निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने के लिए हमें और अधिक उत्साह एवं समर्पण से अपना सरकारी कार्य हिंदी में करना होगा.

केन्द्रीय जल आयोग में मूल पत्राचार अधिकांशतः हिंदी में किया जा रहा है. हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने का प्रयास भी किया जा रहा है. इसके लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी भाषा तथा टंकण आदि का प्रशिक्षण प्रदान करवाया जा रहा है ताकि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अधिक से अधिक हिंदी में कार्य करने में सक्षम हो सकें. हमें सरल व आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए ताकि आयोग में हिन्दी भाषा के कार्यान्वयन की स्थिति और अधिक सुदृढ़ हो सके.

मैं आपको बताना चाहूँगा कि हाल ही में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा केंद्रीय जल आयोग (मुख्यालय) का राजभाषाई निरीक्षण किया गया था जिसमें माननीय सदस्यों ने आयोग में हिन्दी के कार्यान्वयन की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए सराहना की. राजभाषा का प्रचार–प्रसार करना हमारा एक संवैधानिक दायित्व है. आइए, इस अवसर पर हम सब शपथ लें कि हम अपना सरकारी कार्य यथासंभव हिन्दी में करेंगे और राजभाषा के विकास में अपना बहुमूल्य योगदान देंगे.

दिनांक 01 से 14 सितंबर, 2020 के बीच केन्द्रीय जल आयोग (मुख्यालय) में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है. आप सभी से अपील है कि पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लें.

मैं, हिन्दी दिवस के इस पावन अवसर पर केन्द्रीय जल आयोग (मुख्यालय) तथा क्षेत्रीय कार्यालयों क सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से अपील करता हूँ कि आप सभी सरकारी कार्य अधिक से अधिक हिन्दी में करने का संकल्प लें. इस समय सम्पूर्ण विश्व कोविड–19 महामारी से ग्रस्त है. फिर भी, आप सभी ऐसी कठिन परिस्थितियों में सावधानी और गृह मंत्रालय द्वारा जारी मानक परिचालन प्रक्रिया (एस ओ पी) का पालन करते हुए पखवाड़े में बढ़–चढ़ कर भाग लें और पखवाड़े को सफल बनाएं.

शुभकामनाओं सहित,

(राजेन्द्र कुमार जैन)

केन्द्रीय जल आयोग (मुख्यालय) में हिन्दी पखवाड़ा, 2020 का आयोजन

केंद्रीय जल आयोग मुख्यालय में सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिन्दी पखवाड़ा–2020 का आयोजन किया गया. केंद्रीय जल आयोग में हिन्दी पखवाड़ा–2020 का आयोजन 01 सितंबर से 14 सितंबर, 2020 तक किया गया. इस उपलक्ष्य में अध्यक्ष, के.ज.आ. द्वारा एक अपील जारी की गई जिसमें के.ज.आ. (मुख्यालय) तथा क्षेत्रीय कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों को हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने का निर्देश दिया गया. इसके अलावा माननीय मंत्री महोदय, जल शक्ति मंत्रालय, माननीय राज्यमंत्री महोदय, जल शक्ति मंत्रालय, मंत्रिमंडल सचिव, भारत सरकार, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग की अपीलसंदेश भी परिचालित किए गए. हिन्दी अनुभाग द्वारा सभी क्षेत्रीय कार्यालयों को हिन्दी पखवाड़ा–2020 के आयोजन हेतु दिशा निर्देश जारी किए गए. कोविड–19 महामारी के सुरक्षोपाय के दृष्टिगत हिन्दी पखवाड़ा–2020 का उद्घाटन एवं समापन समारोह का आयोजन नहीं किया गया. हिन्दी पखवाड़ा के दौरान सभी प्रतियोगिताएं गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानक प्रचालन प्रक्रिया के अनुरूप सफलतापूर्वक आयोजित की गईं.

इस दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं –

1. टिप्पण–आलेखन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी एवं हिन्दीत्तर भाषियों के लिए)
2. हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता
3. सुलेख प्रतियोगिता (एमटीएस कर्मचारियों के लिए)
4. हिंदी टंकण प्रतियोगिता (कम्प्यूटर पर)
5. अनुवाद प्रतियोगिता (सभी के लिए)
6. तकनीकी भाषण प्रतियोगिता (हिन्दी भाषियों एवं हिंदीत्तर भाषियों के लिए)
7. काव्य प्रतियोगिता (हिन्दी भाषियों एवं हिंदीत्तर भाषियों के लिए)

उपरोक्त प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को निम्नानुसार प्रमाण पत्र तथा नकद पुरस्क्र दिए गए–

प्रथम पुरस्कार	– 3000/–
द्वितीय पुरस्कार	– 2000 /–
तृतीय पुरस्कार	– 1500/–
सांत्वपना पुरस्कार	– 1000/–

इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग द्वारा चलाई जा रही हिंदी टिप्पण–आलेखन योजना के अंतर्गत भी नियमानुसार पुरस्कार प्रदान किए गए.

वर्ष के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने हेतु केंद्रीय जल आयोग द्वारा चलाई जा रही शील्ड योजना के अंतर्गत के.ज.आ. के अनुभाग/निदेशालय एवं आयोग के 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र में स्थित अधीनस्थ् क्षेत्रीय कार्यालयों को राजभाषा शील्डय प्रदान की गईं.

विभिन्नत राज्यों में स्थित केन्द्रीय जल आयोग (मुख्यालय) के अधीनस्थ कार्यालयों में भी हिंदी पखवाड़ा का सफल आयोजन किया गया तथा इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं.

केंद्रीय जल आयोग में आयोजित की गई सभी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों का विवरण निम्नानुसार है–

हिंदी टिप्पण–आलेखन (हिंदी भाषी) प्रतियोगिता

श्री आई ए खान	– प्रथम पुरस्कार
श्री पीयूष उपाध्याय	– द्वितीय पुरस्कार
श्रीमती रेखा साह	– तृतीय पुरस्कार
श्री सतीश दवे	– सांत्वना पुरस्कार

श्रीमती नूतन राय – सांत्वना पुरस्कार
श्री अंकुर कुमार – सांत्वना पुरस्कार

हिंदी टिप्पण–आलेखन (हिंदीत्तर भाषी) प्रतियोगिता

श्री गोपाल दास – प्रथम पुरस्कार
श्री प्रिया आर पी – द्वितीय पुरस्कार
श्री निधीन पी – तृतीय पुरस्कार
श्री माजेटि रवि – सांत्वना पुरस्कार

हिंदी निबंध प्रतियोगिता

श्रीमती नूतन राय – प्रथम पुरस्कार
श्रीमती प्रिया आर पी – द्वितीय पुरस्कार
श्री सचिन गुप्ता – तृतीय पुरस्कार
श्री राजेन्द्र प्रसाद मीना – सांत्वना पुरस्कार
श्री नागेंद्र कुमार सांत्वना – सांत्वना पुरस्कार
श्री याकूब अहमद – सांत्वना पुरस्कार

अनुवाद प्रतियोगिता

श्री आई ए खान – प्रथम पुरस्कार
श्री अजय कुमार गौतम – द्वितीय पुरस्कार
श्री जिया उल हक – तृतीय पुरस्कार
श्री धीरेंद्र कुमार – सांत्वना पुरस्कार
श्री संदीप कुमार – सांत्वना पुरस्कार
श्री याकूब अहमद – सांत्वना पुरस्कार
श्री परवेश तेनूरिया – सांत्वना पुरस्कार

टंकण प्रतियोगिता

श्री रवि कुमार – प्रथम पुरस्कार
श्री सचिन कुमार – प्रथम पुरस्कार
श्री हरवीर सिंह – द्वितीय पुरस्कार
श्रीमती रेखा शाह – तृतीय पुरस्कार
श्री कुन्दन कुमार – सांत्वना पुरस्कार
श्री गोपाल दास – सांत्वना पुरस्कार
श्री उपेंद्र कुमार – सांत्वना पुरस्कार

काव्य प्रतियोगिता (हिंदी भाषी)

श्री वारिद गुप्ता – प्रथम पुरस्कार
श्री विनीत कुमार उपाध्याय – द्वितीय पुरस्कार
श्रीमती मीना सहगल – तृतीय पुरस्कार
श्री सत्येंद्र सिंह, – सांत्वना पुरस्कार
श्रीमती पिंकी पाण्डेय – सांत्वना पुरस्कार
श्री अंशु सिंह – सांत्वना पुरस्कार

काव्य प्रतियोगिता (हिंदीत्तर भाषी)

श्रीमती बनानी राय – प्रथम पुरस्कार
श्रीमती वी.कुमारी – द्वितीय पुरस्कार
श्रीमती मिनी पोलसन – तृतीय पुरस्कार
वाई आई सिंह – सांत्वना पुरस्कार
श्रीमती महालक्ष्मी – सांत्वना पुरस्कार

सुलेख प्रतियोगिता

सुश्री प्रीति त्रिपाठी – प्रथम पुरस्कार
श्री रणधीर सिंह – द्वितीय पुरस्कार
श्री हरवीर सिंह – तृतीय पुरस्कार
श्री राम प्रसाद – सांत्वना पुरस्कार
श्री आर सुरेश – सांत्वना पुरस्कार
श्री सूर्यमणि – सांत्वना पुरस्कार

तकनीकी भाषण प्रतियोगिता (हिंदी भाषी)

श्री परवेश तेनूरिया – प्रथम पुरस्कार
श्री राम ललित – द्वितीय पुरस्कार
श्री विनीत कुमार उपाध्याय – तृतीय पुरस्कार
श्री ए के गौतम – सांत्वना पुरस्कार
श्री वारिद गुप्ता – सांत्वना पुरस्कार
श्रीमती रीटा अंगरीश – सांत्वना पुरस्कार

तकनीकी भाषण प्रतियोगिता (हिंदीत्तर भाषी)

श्रीमती मिनी पोल्सन – प्रथम पुरस्कार
श्रीमती वी.कुमारी – द्वितीय पुरस्कार

श्री निधीन पी – तृतीय पुरस्कार
श्रीमती उमा वी – सांत्वना पुरस्कार
श्री माजेटि रवि – सांत्वना पुरस्कार

राजभाषा विभाग द्वारा संचालित मूल हिंदी टिप्पण आलेखन योजना में पुरस्कार प्राप्त करनेवाले अधिकारी/कर्मचारी

श्री राकेश कुमार – प्रथम पुरस्कार
श्री पीयूष उपाध्याय – प्रथम पुरस्कार
श्री आनंद रंजन कुमार – द्वितीय पुरस्कार
श्री विवेक वर्मा – द्वितीय पुरस्कार

श्री सचिन कुमार – द्वितीय पुरस्कार
श्री रवि कुमार – तृतीय पुरस्कार
श्री गोपाल चन्द्र दास – तृतीय पुरस्कार
श्री धरमवीर कुमार सिन्हा – तृतीय पुरस्कार
श्री अंकुर कुमार – तृतीय पुरस्कार
श्रीमती रेखा शाह – तृतीय पुरस्कार

राजभाषा विभाग द्वारा संचालित मूल हिंदी डिक्टेशन योजना में पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारी

हिंदी भाषी
श्री मोती लाल – प्रथम पुरस्कार

हिंदीत्तर भाषी
डॉ. समीर चटर्जी – प्रथम पुरस्कार

केंद्रीय जल आयोग द्वारा लागू की गई राजभाषा शील्ड योजना वर्ष 2019–2020

क्षेत्रीय कार्यालय
'क' क्षेत्र– मध्य गंगा मण्डल–III वाराणसी
'ख'क्षेत्र – प्रबोधन एवं मूल्यांकन निदेशालय, चंडीगढ़
'ग' क्षेत्र– निचली कृष्णा मंडल, हैदराबाद

अनुभाग/निदेशालय
1. अभिकल्प एवं अनुसंधान समन्वय निदेशालय (तकनीकी कार्य)
2. स्थापना–7 (प्रशासनिक कार्यालय)

हिन्दी पखवाड़ा–2020 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में केन्द्रीय जल आयोग के अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया. केन्द्रीय जल आयोग (मुख्याजलय) के विभिन्न राज्यों में स्थित अधीनस्थ कार्यालयों में भी हिंदी पखवाड़ा का सफल आयोजन किया गया तथा इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं तथा विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए .

—केन्द्रीय जल आयोग
नयी दिल्ली–110 066

*****

हिन्दुस्तान की है शान हिंदी,
हर हिन्दुस्तानी की है पहचान हिंदी.
एकता की अनुपम परम्परा है हिन्दी,
हर दिल का अरमान है हिंदी.

केंद्रीय जल आयोग–क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी पखवाड़ा

जल विज्ञानीय प्रेक्षण परिमंडल, वाराणसी

वाराणसी स्थित केन्द्रीय जल आयोग के इस परिमंडल कार्यालय ने अपने अधीनस्थ के साथ संयुक्त रूप से 14.09..2020 से 28.09..2020 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन सफलतापूर्वक किया.

आयोजित की गई प्रतियोगिताएं थीः–

(क) टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

1. श्री मनीष कुमार – प्रथम
2. श्री विवेक नन्दन – द्वितीय
3. श्री बंशीधर राय – तृतीय
4. श्री रेड्डी चंटी – सांत्वना
5. श्री प्रदीप कुमार सोनी – सांत्वना

(ख) निबंध प्रतियोगिता

1. श्री विवेक नन्दन – प्रथम
2. श्री रेड्डी चंटी – द्वितीय
3. श्री मनीष कुमार – तृतीय
4. श्री हनुमानजी गुप्ता – तृतीय
5. श्री राजकपूर – सांत्वना

(ग) हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता

1. श्री मनीष कुमार – प्रथम
2. श्री बंशीधर राय – द्वितीय
3. श्री विवेक नन्दन – तृतीय
4. श्री प्रदीप कुमार सोनी – सांत्वना
5. श्री हनुमानजी गुप्ता – सांत्वना

निचली यमुना मंडल, आगरा

केन्द्रीय जल आयोग के निचली यमुना मंडल, आगरा स्थित कार्यालय द्वारा 28 सितम्बर, 2020 को हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया. कार्यशाला का शुभारम्भ श्री जी एल बंसल, निदेशक, प्रबोधन निदेशालय तथा अध्यक्ष महोदय द्वारा संयुक्त रूप से किया गया.

इस अवसर पर कनिष्ठ अनुवादक ने राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा–3(3) के तहत जारी होने वाले कागजातों पर प्रकाश डालते हुए बताया और राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के बारे में बताया और अनुरोध किया कि कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त होने वाले सभी पत्रों का जबाब हिंदी में ही दिया जाए.

मुख्य अतिथि श्री जी एल बंसल ने हिंदी के विकास और प्रसार विषय पर बोलते हुए बताया कि आज हिंदी का प्रयोग सरकारी काम काज में बढ़ रहा है. यह एक शुभ संकेत हैं और हम सबको मिल जुल कर अपने सामूहिक प्रयासों से तथा प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाकर हिंदी के विकास को गति प्रदान करनी चाहिए. वैश्विक स्तर पर भी हिंदी के महत्व का स्वीकार किया जा रहा है.

अंत में श्री मनोज कुमार, अधिशासी अभियन्ता, निचली यमुना मंडल, आगरा ने मुख्य अतिथि श्री जी एल बंसल तथा मंडल के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का धन्यवाद दिया तथा जो भी सुझाव व जानकारी कार्यशाला में दी गयी, उनका अनुपालन करने का अनुरोध किया. कार्यशाला का संचालन श्री कपूर सिंह, कनिष्ठ अनुवादक ने किया.

निचली यमुना मंडल, आगरा द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़ा 2020 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनके विजेताओं का विवरण निम्नलिखित है:

(क) निबंध प्रतियोगिता

1. श्री जय करन सिंह – प्रथम
2. श्री शशिकान्त मीना – द्वितीय
3. कु गर्विता जायसवाल – तृतीय
4. श्री अजय कुमार – सांत्वना

(ख) राजभाषा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

1. कु गर्विता जायसवाल – प्रथम पुरस्कार
2. श्री शशिकान्त मीना – द्वितीय पुरस्कार
3. श्री वासुदेवदास – तृतीय पुरस्कार
4. श्री उपेन्द्र शाह – तृतीय पुरस्कार
5. श्री अजय कुमार – सांत्वना पुरस्कार

(ग) भाषण प्रतियोगिता

1. श्री जय करन सिंह – प्रथम पुरस्कार
2. श्री प्राण कृष्ण नायक – द्वितीय पुरस्कार
3. श्री वासु धनावाथ – तृतीय पुरस्कार
4. श्री वासुदेवदास – सांत्वना पुरस्कार

कावेरी एवं दक्षिणी नदियॉं परिमंडल, बेंगलूरू

जल सौधा, बेंगलूरू में स्थित केन्द्रीय जल आयोग, कावेरी एवं दक्षिणी नदियॉं परिमंडल में दिनांक 14.09.2020 से 28.09.2020 तक की अवधि के दौरान कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए श्री वू. मोहन मुरलि, अधीक्षण अभियन्ता की अध्यक्षता में हिन्दी पखवाड़ा 2020 मनाया गया.

अध्यक्ष महोदय ने सभी स्टॉफ से अनुरोध किया कि उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़ कर भाग लें और अपने साथी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं स्टॉफ को भी प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करें. अध्यक्ष महोदय ने कोविड–19 महामारी को देखते हुए हिन्दी पखवाड़ा में आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करने के लिए अनुरोध किया जैसे मास्क पहनना और शारीरिक दूरी (सोशल डिस्टेन्सिंग) का पुर्णतया पालन.

हिन्दी पखवाड़े में चार प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थी. प्रतियोगिता में हिन्दी एवं हिन्दीत्तर भाषी कर्मचारीगणों ने बड़ी उत्सुकता से भाग लिया.

अध्यक्ष श्री वू. मोहन मुरलि, अधीक्षण अभियंता ने हिन्दी पखवाड़ा–2020 की प्रतियोगिताओ में भाग लेने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की बड़ी प्रशंसा की और प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अपनी बधाईयॉं दी तथा राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में प्रगति लाने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अधिक प्रयास करने के एिल निवेदन किया तथा कार्यालय का कार्य अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने का अनुरोध किया.

प्रतियोगिताओं और विजेताओं का विवरण इस प्रकार से रहा:–

हिंदी टिप्पण–लेखन प्रतियोगिता (हिंदी एवं हिन्दीत्तर भाषी)

श्रीमती उषा कुमारी आर. – प्रथम पुरस्कार
श्री अमित दहिया – द्वितीय पुरस्कार
श्रीमती इन्दू एस. – तृतीय पुरस्कार

निबंध लेखन प्रतियोगिता (हिंदी एवं हिन्दीत्तर भाषी)

श्री अमित दहिया – प्रथम पुरस्कार
श्री आदित्य सिंह – द्वितीय पुरस्कार
श्री टी वी मोहन कुमार – तृतीय पुरस्कार

हिन्दी शब्दावली प्रतियोगिता (हिंदी एवं हिन्दीत्तर भाषी)

श्रीमती कुमारी सौंदर्या – प्रथम पुरस्कार
श्रीमती उषा कुमारी आर. – द्वितीय पुरस्कार
श्रीमती इन्दू एस. – तृतीय पुरस्कार

श्रुत लेखन प्रतियोगिता (हिंदी एवं हिन्दीत्तर भाषी)

श्री आदित्य सिंह	– प्रथम पुरस्कार
श्री मंजुनाथा	– द्वितीय पुरस्कार
श्री टी वी मोहन कुमार	– तृतीय पुरस्कार

निचली गंगा मंडल–2, पटना

निचली गंगा मंडल सं0 –2, केन्द्रीय जल आयोग, पटना के कार्यालय में 14 सितम्बर, 2020 हिन्दी दिवस के अवसर पर दिनांक 14.09.2020 से 28.09.2020 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया. पखवाड़ा को सफल बनाने हेतु सर्वप्रथम कार्यालय एवं इसके अन्तर्गत कार्यरत सभी उपमंडलीय कार्यालयों को इस अवधि में अपने–अपने समस्त सरकारी कार्यों को हिन्दी में ही करने की अपील कार्यालय–प्रधान श्री नरेन्द्र नाथ शंकर, अधिशासी अभियंता द्वारा की गयी. पखवाड़ा को सफल बनाने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु दिनांक 17.09.2020 एवं 18. 09..2020 को तीन विषयों पर प्रतियोगिताओं का आयोजन कर सफल प्रतिभागियों को नियमानुसार पुरस्कार स्वरूप नकद राशि प्रदान करने का प्रस्ताव भी रखा गया.

तद्नुसार दिनांक 17.09.2020 एवं 18.09.2020 को प्रतियोगिताओं का आयोजन समस्त कर्मियों के बीच करने के पश्चात् दिनांक 28.09.2020 को पखवाड़ा के समापन दिवस के दिन एक विशेष आयोजन कर समस्त कर्मियों की उपस्थिति में कार्यालय–प्रधान श्री नरेन्द्र नाथ शंकर, अधिशासी अभियंता केन्द्रीय जल आयोग, पटना द्वारा सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत कर कर्मियों/प्रतिभागियों का मनोबल बढ़ाया गया. इस अवसर पर लोगों ने हिन्दी को कार्यालयों में अधिक से अधिक प्रयोग करने संबंधी अपने–अपने विचारों को रखा.

नरेन्द्र नाथ शंकर, अधिशासी अभियंता ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि हिन्दी अपनी राजभाषा है. हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य कर हम इसके विकास में सहयोग कर सकते हैं. एक सकारात्मक सोच एवं लगन के साथ इस कार्य को बहुत ही सरलतापूर्वक किया जा सकता है. उन्होंने यह भी कहा कि एक अच्छी हिन्दी बोलकर एवं लिखकर भी लोगों के बीच अपनी पहचान बनायी जा सकती है.

अंत में इस आशा के साथ पखवाड़ा का समापन किया गया कि हम लोग इस दिशा में सार्थक प्रयास कर राजभाषा को आगे बढ़ाने में सफल रहेंगे.

कृष्णा एवं गोदावरी बेसिन संगठन

कृष्णा एवं गोदावरी बेसिन संगठन, केंद्रीय जल आयोग, हैदराबाद के हैदराबाद में स्थित सभी अधीनस्थ कार्यालयों के स्तर पर दिनांक 14.09.2020 से दिनांक 28.09.2020 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा–2020 का वर्तमान कोविड–19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में केंद्र सरकार द्वारा समय –समय पर जारी दिशा–निर्देशों को ध्यान मे रखते हुए कार्यक्रमों का आयोजन किया गया. दिनांक 14.09.2020 को पूर्वाहन 11.00 बजे हिन्दी पखवाड़ा–2020 का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया जिसकी शुरुवात हमारे राष्ट्रीय गीत (वन्देमातरम) से हुई, जिसे मौके पर उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने–अपने जगह खड़े होकर आलापन किए. श्रीमती एम. गंगा भवानी, उप निदेशक द्वारा स्वागत भाषण हुआ. हिन्दी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश प्रबोधन एवं मूल्यांकन(आं.प्र) निदेशालय के निर्देशक श्री पी देवेंदर राव द्वारा व अध्यक्ष, केंद्रीय जल आयोग द्वारा जारी किए गए दिशा–निर्देश कृष्णा एवं समन्वय परिमंडल के अधीक्षण अभियंता श्री बैरी., श्रीनिवासु द्वारा हिन्दी पखवाड़े का आयोजन संबंधी दिशा–निर्देश का पठन तथा सचिव, राजभाषा विभाग, जल शक्ति मंत्रालय का अपील का पठन गोदावरी परिमंडल के निदेशक श्री एम. रघुराम द्वारा सभा के सामने पढ़कर प्रस्तुत किए गए. तत्पश्चात कृष्णा एवं गोदावरी बेसिन संगठन के मुख्य अभियंता श्री एम.के. श्रीनिवास ने हिन्दी पखवाडा–2020 का उद्घाटन घोषित

करते हुए सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे अपने रोजमर्रा कार्यालयीन कामकाज को हिन्दी में करें और ज्यादा से ज्यादा संख्या में पखवाड़ा के दौरान आयोजित किए जाने वाले प्रतियोगिताओं में भाग लेकर हिन्दी भाषा में अपनी क्षमता दिखाकर हिन्दी पखवाड़ा–2020 को सफल बनाएं. अंत में निचली कृष्णा मंडल के सहायक निदेशक–II श्री जी एस राव द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत की गई और राष्ट्रीय गान का आलापन के बाद उद्घाटन समारोह को समाप्त किया गया.

प्रतियोगिताओं और विजेताओं का विवरण इस प्रकार से रहाः–

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

श्री टी. श्रीहर्षी	–प्रथम
श्री पी. विजय कुमार	– द्वितीय
श्री एच.वी.एस.एस.आर. मूर्ति	–तृतीय
श्री आइ. श्रीनिवासा राव	–सांत्वना
श्री पी. लक्ष्मीकान्त	–सांत्वना
श्री अभिजित पी	–सांत्वना

स्मृति लेखन/अनुवाद प्रतियोगिता

श्री पी. विजय कमार	–प्रथम
श्री एच.वी.एस.एस.आर. मूर्ति	– द्वितीय
श्री नीरज कुमार साहू	–तृतीय
श्री डी. गणेश कमार	–सांत्वना
श्री. एम. भास्कर	–सांत्वना
श्री. एम. रवीद्र बाबू	–सांत्वना

श्रुतलेख व सुलेख प्रतियोगित

श्री शेक. एमडी	–प्रथम
श्री के विजय कुमार	– द्वितीय
श्री टी. रविकुमार	– तृतीय
श्री डी. सुरेश	–सांत्वना
श्री डी. सुवर्णा कुमार	–सांत्वना
श्रीमती ए. भानु कुमारी	–सांत्वना

हिन्दी भाषियों के लिए निबंध प्रातियोगिता

श्री सत्यम वर्मा	–प्रथम
श्री नीरज कुमार साहू	– द्वितीय
श्रीमती डॉ डॉली जाईसवल	– तृतीय
श्री मुकेश कुमार यादव	–सांत्वना
श्री दीपक गुप्ता	–सांत्वना
श्री हेच सी प्रधान	–सांत्वना

अहिन्दी भाषियों के लिए निबंध प्रतियोगिता

शैक नाजिर पाशा	–प्रथम
श्री डी. गणेश कुमार	– द्वितीय
श्री सी. एच. सुमन	–तृतीय
श्री डी. सुवर्णा कुमार	–सांत्वना
श्री के. विजय कुमार,	–सांत्वना
श्री अभिजित पी	–सांत्वना

हिन्दी में वाद–विवाद प्रतियोगिता

श्री एच.सी	–प्रथम
श्री. डी. कृष्णा	– द्वितीय
श्री एम.रवींद्रबाबु	–तृतीय
श्री सी. श्रीनिवास	–सांत्वना
श्री सी. श्रीनिवासुलु	–सांत्वना
श्री. टी. एस. रमेशबाबु	–सांत्वना

हिन्दी में टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता

श्री टी. श्रीहर्षी	–प्रथम
श्री दीपक गुप्ता	– द्वितीय
श्री आई. श्रीनिवास राव	–तृतीय
श्री. ए. एन. स्वामी	–सांत्वना
श्री जी एस. राव	–सांत्वना
श्री जी. बाबुजी राव	–सांत्वना

प्रशासनिक शब्दावली पर अंत्याक्षीरी प्रतियोगिता

श्री जी. अनंत साई	–प्रथम
श्री के बाला सुधीर	–प्रथम
श्री के. पोचय्या	–द्वितीय
श्री मुकेश कुमार यादव	–द्वितीय
श्री पी सुरेश	–तृतीय
श्री एस. वेंकट सुब्बय्या	–तृतीय
श्री सी. श्रीनिवास	–तृतीय
श्री के. संजीव कुमार	–सांत्वना
श्री वी. सीवसई संतोष कुमार	–सांत्वना
श्री. डी. सुरेश, बहु कार्य कर्मचारी	–सांत्वना
श्री सी एच सुमन, कनिष्ठ अभियंता	–सांत्वना

प्रश्न–मंच प्रतियोगिता

श्री ए एन स्वामी	–प्रथम
श्री एम क्रान्ति कुमार	–प्रथम
श्री टी. रवि कुमार	–प्रथम
श्री डी. कृष्णा	–द्वितीय
श्री ए. पोलि नायडू	–द्वितीय
श्री शेक. महमद रफी	–द्वितीय
श्री एस वेंकट सुबैया	–तृतीय
श्री पी सुरेश	–तृतीय
श्री रमावत अर्जुन	–तृतीय
श्री. जी. अनंत साई	–सांत्वना
श्री के. बाल सुधीर	–सांत्वना
श्री शैक नाजीर पाषा	–सांत्वना
श्री एल लक्ष्मी नारायणा	–सांत्वना
श्री के. पृथ्वीराज	–सांत्वना
श्री के. संजीव कुमार	–सांत्वना
श्री टी.एस. रमेश बाबु	–सांत्वना

प्रोत्साहन पुरस्कार

कुमारी. जी. शरण्या
श्री. जे. साजन कुमार
श्री. वी. वी. एस. एन. मूर्ती
श्री. सी. एच. संजीव
श्री. ए. अशोक
श्री. ए. विजय कुमार
श्री. एन. लक्ष्मण राव

माही व तापी बेसिन संगठन, केंद्रीय जल आयोग, गांधीनगर

माही व तापी बेसिन संगठन, केन्द्रीय जल आयोग, गांधीनगर में 14 से 28 सितंबर 2020 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया. इसमें नर्मदा तापी भवन गांधीनगर में स्थित माही व तापी बेसिन संगठन के सभी कर्मचारियों ने भाग लिया.

हिन्दी पखवाड़ा का शुभारंभ दिनांक 14.09.2020 को हिन्दी दिवस के साथ हुआ. आयोजन का विधिवत शुभारंभ, नर्मदा तापी भवन, गांधीनगर के आर. डी. पी. एस. सी. में दिनांक 14.09.2020 को 04:00 बजे श्री महेंद्र प्रताप सिंह, मुख्य अभियंता, माही व तापी संगठन, श्री योकि विजय, अधीक्षण अभियंता (समन्वय) माही व तापी संगठन, श्री यज्ञेश्वर शरण वार्षणेय, अधीक्षण अभियंता, जल विज्ञानीय प्रेक्षण परिमंडल तथा श्री श्रेयस गुणे, अधिशासी अभियंता, माही मंडल के द्वारा मंगल दीप प्रज्वलित कर किया गया.

समारोह के प्रारम्भ में श्री महेंद्र प्रताप सिंह, मुख्य अभियंता ने हिन्दी दिवस और हिन्दी पखवाड़ा का महत्व बताते हुए आह्वान किया कि हिन्दी पखवाड़ा में होने वाली प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारी एवं कर्मचारी बढ़ चढ़ कर भाग लें, साथ ही यह भी सचेत किया कि, कोविड–19 को ध्यान रखते हुए भारत सरकार द्वारा जारी किये गये दिशानिर्देशों के साथ ही एक दूसरे से 2 गज की दूरी का पालन अवश्य करें.

श्री योकि विजय, अधिक्षण अभियंता (समन्वय), माही व तापी बेसिन संगठन, गांधीनगर, ने हिन्दी पखवाड़ा, (14 से 28 सितंबर 2020) के आयोजन पर सभी को बधाई देते हुए कहा कि माही व तापी बेसिन संगठन तथा अधीनस्थ कार्यालयों मे कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सतत–उत्कृष्ट प्रयासों से विगत वर्षों में इस संगठन के कार्यालयों नें राजभाषा शील्ड प्राप्त किया हैं. यह हिन्दी के उतरोत्तर प्रयोग के क्षेत्र में उनके सतत प्रयासों का ही प्रतीक है. माही व तापी बेसिन संगठन तथा अधीनस्थ

कार्यालयों में अधिकतर सरकारी कार्य हिन्दी में हो रहा है तथा सभी कर्मचारी बोलचाल में राजभाषा हिंदी का ही प्रयोग करते है जो कि प्रशंसनीय है.

श्री यज्ञेश्रर शरण वार्षणेय, अधीक्षण अभियंता, जल विज्ञानीय प्रेक्षण परिमंडल, गांधीनगर ने बल दिया कि माही व तापी बेसिन संगठन तथा अधीनस्थ कार्यालयों में अधिक से अधिक पत्राचार हिन्दी में किया जाए. उन्होंने आह्वान किया कि राजभाषा विभाग में वार्षिक कार्यक्रम में की गई व्यवस्थाओं के अनुरूप शत–प्रतिशत सरकारी कामकाज हिन्दी में करें. उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी के लेखन में होने वाली कठिनाईयों का मूल कारण हिन्दी में लेखन कार्य न करने की आदत का होना है, हिन्दी पखवाड़े का आयोजन हमें इससे बाहर निकलने का अवसर प्रदान करता है. उन्होंने पत्राचार को पूर्णतः हिन्दी में करने हेतु बल दिया तथा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रतियोगिताओं में भाग लेने का महत्त्व बताते हुए हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने एवं अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिन्दी में ही करने की अपील की.

श्री श्रेयस गुणे, अधिशासी अभियंता, माही मंडल ने हिन्दी पखवाड़े के आयोजन की रूप रेखा बताते हुए सूचित किया कि हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली सभी प्रतियोगिताएं मुख्य अभियंता कार्यालय, जल विज्ञानीय प्रेक्षण परिमंडल, प्रबोधन निदेशालय एवं माही मंडल के लिए सम्मिलित रूप से आयोजित होंगी.

हिन्दी पखवाड़ा 2020 का समापन समारोह दिनांक 28.09.2020 को अपरान्ह 04.00 बजे श्री महेन्द्र प्रताप सिंह, मुख्य अभियंता, माही व तापी बेसिन संगठन, गांधीनगर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया.

अध्यक्ष श्री महेन्द्र प्रताप सिंह, मुख्य अभियंता, माही व तापी बेसिन संगठन, गांधीनगर एवं श्री योकि विजय, अधीक्षण अभियंता (समन्वय) माही व तापी संगठन, गांधीनगर द्वारा, हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओ में विजयी प्रतिभागियों को नगद धनराशी एवं प्रमाण पत्र पुरस्कार के रूप में देकर विजेताओं को सम्मानित किया गया. समारोह के दौरान मुख्य अभियंता महोदय ने सभी अधिकारियो एवं कर्मचारियों को अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने का संकल्प लेने हेतु कहा साथ ही आगामी वर्षो में हिन्दीत्तर भाषी वर्गों को ऐसे कार्यक्रमों में ज्यादा से ज्यादा भाग लेने एवं उन्हें अधिक प्रोत्साहित करने पर जोर दिया.

अन्त में श्री योकि विजय अधिक्षण अभियंता (समन्वय) द्वारा उपस्थित सभी अधिकारीयों, कर्मचारियों तथा सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ "हिन्दी पखवाडा 2020" का समापन हुआ.

पखवाड़ा 2020 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनके विजेताओं का विवरण निम्नलिखित है:

हिन्दी टिप्पण एवं पत्र लेखन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी)

श्री इल्तिफात अनवर	– प्रथम
श्री चेतन पंवार	– द्वितीय
श्री सूरजन मीणा	– तृतीय

हिन्दी टिप्पण एवं पत्र लेखन प्रतियोगिता (हिंदीत्तर भाषी)

श्री राजन कुमार चुड़ासमा	– प्रथम
श्री एन एम श्रीमाली	– द्वितीय
श्री आचार्य मयंक	– तृतीय

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता कम्प्यूटर से (हिंदी भाषी)

श्री उत्तम कुमार सैनी	– प्रथम
श्री निशांत कुमार	– द्वितीय
श्री चेतन पंवार	– तृतीय

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता कम्प्यूटर से (हिंदीत्तर भाषी)

श्री जयप्रकाश के	– प्रथम
श्री उत्सा सेन	– द्वितीय
श्री बीनल मोदी	– तृतीय

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी)

श्री इल्तिफात अनवर	– प्रथम
श्री उत्तम कुमार सैनी	– द्वितीय
श्री निशांत कुमार	– तृतीय

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता (हिंदीत्तर भाषी)

श्री बीनल मोदी – प्रथम
श्री उत्सा सेन – द्वितीय
श्री राजन कुमार चुड़ासमा – तृतीय

हिन्दी भाषण प्रतियोगिता (हिंदीत्तर भाषी)

श्री एनएम श्रीमाली – प्रथम
श्री जे एम परमार – द्वितीय
श्री एम एम मलिक – तृतीय

महानदी एवं पूर्वी नदियॉं संगठन मंडल, बुर्ला

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा समय समय पर जारी निर्देशों के अनुपालन में इस मंडल कार्यालय द्वारा 14 सितम्बर से 30 सितम्बर, 2020 की अवधि के दौरान हिन्दी सप्ताह मनाया गया. हिंदी सप्ताह का उद्घाटन समारोह 14 सितंबर, 2020 को 12.00 बजे दीप प्रज्जवलित करके किया गया. इस अवसर पर अधिशासी अभियंता श्री उपानंद रथ, अध्यक्ष, संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति, महानदी मंडल, केन्द्रीय जल आयोग, बुर्ला एवं श्रीमती भुवनेश्वरी आचार्य, प्राचार्य, श्री सत्य सांई किडीज अबोड स्कूल, बुर्ला उपस्थित रहीं. इस अवसर पर श्री होता बाबू अवर श्रेणी लिपिक मंच संचालक ने उपस्थित मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष महोदय के साथ–साथ महानदी मंडल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया. उनके द्वारा हिन्दी दिवस के महत्व की जानकारी देते हुए हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत दिये जाने वाले प्रशिक्षण एवं प्रतियोगिता की जानकारी दी. साथ में हिन्दी प्रशिक्षण में अधिकाधिक संख्या में भाग लेने के लिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध किया. कोरोना वायरस को देखते हुए सोशल डिस्टेंसिंग का भी पूरा ध्यान रखा गया.

मुख्य अतिथि श्रीमती भुवनेश्वरी आचार्य, प्राचार्या द्वारा अपने उद्बोधन में कहा गया कि हिन्दी भाषा भारत में अधिकांश लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है. हिन्दी ही एकमात्र भाषा है जिसके द्वारा हम एक दूसरे के भाव एवं विचार को आसानी से समझ सकते हैं और उन्होंने कहा कि हिन्दी भाषा के माध्यम से अर्न्तराज्यीय सम्बन्ध सरलता से बनते हैं. इसलिए हिन्दी को संपर्क भाषा भी कहते हैं.

हिन्दी सप्ताह के उद्घाटन समारोह के शुभ अवसर पर अधिशासी अभियंता श्री उपानंद रथ, अध्यक्ष, संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति, महानदी मंडल, के ज आ, बुर्ला ने हिन्दी प्रशिक्षण एवं हिन्दी प्रतियोगिता के आयोजन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिन्दी में काम करना आसान है, कार्य करने की इच्छा शक्ति होनी चाहिए हम थोड़े अभ्यास से आसानी से हिन्दी में कार्य कर सकते हैं. उन्होंने आशा व्यक्त किया कि इस हिन्दी प्रशिक्षण के आयोजन से कार्यलय में हिन्दी में काम करने में आसानी होगी. उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिन्दी प्रशिक्षण तथा प्रतियोगिता में भाग लेकर इसे सफल बनाने का अनुरोध किया. अंत में एक संदेश भी दिया कि सिर्फ आज ही हिंदी दिवस न मनाए बल्कि वर्ष भर प्रत्येक दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाते रहें.

राजभाषा हिन्दी के महत्व को ध्यान में रखते हुए राजभाषा कार्यान्वयन समिति, महानदी मंडल, केन्द्रीय जल आयोग बुर्ला द्वारा 14 सितम्बर से 30 सितम्बर 2020 तक हिन्दी सप्ताह मनाने का निर्णय लिया गया था. इस अवसर पर कार्यालय परिसर में विभिन्न प्रकार की प्रशिक्षण एवं प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था. हिन्दी सप्ताह 2020 का समापन समारोह दिनांक 28.09.2019 को अपराह्न 16.00 बजे शुरू हुआ. समापन समारोह के इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती भुवनेश्वरी आचार्या जी, प्राचार्या, श्री सत्य सांई किड्डीज अबोड स्कूल, बुर्ला को आमंत्रित किया गया था.

मंच संचालक श्री बलराम प्रसाद भोई, उच्च श्रेणी लिपिक द्वारा सभी उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों का स्वागत किया गया तथा हिन्दी दिवस के महत्व के बारे में जानकारी देते हुए हर्ष व्यक्त किया एवं हिन्दी सप्ताह के सफल आयोजन के लिए सभी को धन्यवाद दिया गया.

समापन समारोह के अवसर पर विशिष्ठ अतिथि श्रीमती भुवनेश्वरी आचार्या जी ने सरकारी कार्य में हिन्दी का अधिकाधिक उपयोग करने का आह्वान किया एवं हिन्दी सप्ताह के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए.

प्रशिक्षण एवं प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद दिया.

समापन समारोह के अवसर पर अधिशासी अभियंता श्री उपानंद रथ, अध्यक्ष, संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति, महानदी मंडल, के. ज. आ., बुर्ला, ने हिन्दी प्रशिक्षण एवं प्रतियोगिता के बारे में अपने विचार व्यक्त किए. सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण एवं प्रतियोतिा में उत्साह से भाग लेने के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद दिया एवं अनुरोध किया कि समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी भविष्य में सरकारी काम अधिक से अधिक हिन्दी में करने का प्रयास करेंगे. साथ में उनके उत्साह और जोश की प्रशंसा भी की. भविष्य में इसी तरह से जोश के साथ हिन्दी में कार्य जारी रखने की सलाह दी. उन्होंने आशा व्यक्त किया कि इस हिन्दी प्रशिक्षण के आयोजन से कार्यालय में हिन्दी में काम करने में आसानी होगी और हिन्दी में कार्य करने की प्रगति होगी.

माननीय मुख्य अतिथि श्रीमती भुवनेश्वरी आचार्या जी, प्राचार्या, श्री सत्य सांई किड्डीज अबोड स्कूल, बुर्ला तथा अधिशासी अभियंता श्री उपानंद रथ,, अध्यक्ष, संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति, महानदी मंडल, केन्द्रीय जल आयोग, बुर्ला के द्वारा हिन्दी प्रशिक्षण एवं प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया. साथ में शेष प्रतिभागियों को सांत्वना एवं प्रोत्साहन पुरस्कार देकर उनका उत्साहवर्धन किया गया. अंत में श्री अंजन कुमार गणनायक, सहायक निदेशक–II, महानदी मंडल, के. ज.आ, बुर्ला द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात समापन समारोह सम्पन्न घोषित किया गया.

आयोजित प्रतियोगिताएं और प्रतिभागियों के विवरण निम्नांकित रूप से हैं–

1. वर्ष भर हिंदी में डायरी एवं डिस्पैच करने के लिए विशिष्ट पुरस्कार

1. रेखाचित्र शाखा

2. हिन्दी वाचन/पाठन प्रतियोगिता

1. श्री त्रीविक्रम महाकुर – प्रथम
2. श्री गोपीनाथ पण्डा – द्वितीय
3. श्री बासुदेव बाग – तृतीय

3. सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

1. श्री भाष्कर होता – प्रथम
2. श्री जे पी सुना – द्वितीय
3. श्री जगनीबास महाराणा – तृतीय

4. हिंदी श्रुत लेख /सुलेख प्रतियोगिता

1. श्री शरत कुमार पाढ़ी – प्रथम
2 श्री भरत कुमार माझी – द्वितीय
3. श्री युधिष्ठिर कठार – तृतीय

5. हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता

1. श्री अंजन कुमार गणनायक – प्रथम
2. श्री सुदर्शन सुना – द्वितीय
3. श्री जयराम धरूआ – तृतीय

—हिन्दी अनुभाग,
केन्द्रीय जल आयोग
नई दिल्ली–110 066

*****

नदी है तो पानी है, पानी है तो जीवन है
ये जीवन दायनी है, अमृत से कुछ कम नहीं है

सूखती व मरती नदियां जिन्हें दोबारा जीवन मिला

सी.ए. कार्तिक अग्रवाल एवं सी.ए. कुशिक अग्रवाल

औद्योगिक विकास के सूरज ने नदियों के जीवन को अस्त कर दिया क्योंकि मानव ने मुफ्त व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध जल का महत्व नहीं समझा. बढ़ती जनसंख्या, बढ़ते उद्योग, और बदलती जीवन शैली से पानी की मांग निरंतर बढ़ती जा रही है. पानी का बिना सोचे समझे इस्तमाल करने या कहे कि दुरुपयोग करने से और साथ ही अपने जल स्रोतों की उपेक्षा करने व गंदा करने का परिणाम है कि आने वाले दस सालों में हम पानी को तरसेंगें. पानी को संरक्षित करने व नदियों को बचाने के लिए जब प्रशासन और जनता दोनों योगदान करते हैं और प्रबल इच्छा शक्ति दिखाते हैं तभी नदियां पुनर्जीवित हो पाती हैं.

तमसा नदी का उद्‌गम स्थल लखीनपुर गांव के सरोवर को माना जाता है. इसे छोटी सरयु के नाम से पुकारा जाता है. तमसा नदी 264 किलोमीटर की दूरी तय कर के आजमगढ़ में सरयू नदी से मिलती है. तमसा नदी के मार्ग में अनेक गांव पड़ते हैं. यह अयोध्या में 151 किलोमीटर तक बहती है. यहां पर इस के करीब 25 किलोमीटर के प्रवाह–पथ में यह नदी मैदान के रूप में तब्दील होकर लुप्त हो चुकी थी. उत्तर प्रदेश की लखनऊ के अंतर्गत कटेहरी क्षेत्र के धार्मिक स्थल 'श्रवण' क्षेत्र में तमसा का संगम बिसुरी नदी से होता है. मान्यता है कि भगवान राम ने सीता जी और लक्ष्मण के साथ अपने वन गमन में पहली रात तमसा नदी के तट पर गुजारी थी. तमसा नदी के तट पर अवस्थित यह स्थल गौराघाट के नाम से जाना जाता है. तमसा नदी, प्राचीन काल से आस्था व श्रद्धा का केंद्र रही है. इसके तट पर ऋषियों, मुनियों के आश्रम हुआ करते थे. यह नदी अवध क्षेत्र की पहचान रही है. कहते हैं इस नदी का जल कभी सूखता नहीं था. यह बारहमासी नदी थी. तमसा नदी अपनी प्रवाह क्षेत्रों में सिंचाई का प्रमुख साधन रही है और पीने के पानी का स्रोत भी थी. वर्षों के भरपूर दोहन एवं दुरुपयोग के कारण तमसा नदी का जल प्रदूषित व जहरीला हो गया था. औद्योगिक इकाईयों के कचरे बहाने से यह नदी न तो जीवनदायिनी रही थी ना ही इसका जल आचमन योग्य रहा था. नदी का जल पशु–पक्षी व मनुष्यों के लिए भी नुकसान दायक हो गया था. नदी के किनारों के घाटो को कूड़ाघर बना दिया गया था. नदी का जल दूषित व दुर्गंध युक्त हो गया था, जिसे उसके कसेले स्वाद के कारण जंगली जानवर और मवेशी भी नहीं पीते थे. वर्ष 2019 के आरंभ में तमसा नदी को नव जीवन प्रदान करने की मुहिम चलाई गई. इस पर करोड़ों रूपए खर्च हुए. तमसा नदी के तट पर दो लाख पौधे रोपे गए हैं इससे जल के साथ– साथ पर्यावरण संरक्षण भी हुआ है. तमसा नदी के क्षेत्र के बरसाती नालों, तालाबों, झीलों व कुओं को भी संरक्षित किया गया है. अब इसमें जलीय जीवों और परिंदों को देखा जा सकता है. सिंचाई का भी यह नदी बेहतरीन साधन बन चुकी है. पौराणिक स्मृतियों से जुड़ी त्रेता युग की तमसा नदी जो विलुप्त होने के कगार पर थी, आज कल – कल करती बह रही है.

छत्तीसगढ़ की सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में, अमूल्य योगदान देने वाली हैं बस्तर क्षेत्र की नदियाँ यहाँ की शिवनाथ नदी सदानीरा है. इस का जल कभी नहीं सूखता है. शिवनाथ नदी राजनांदगांव जिले की उच्च भूमि में अंबागढ़ तहसील की 625 मीटर (लगभग 2000 फीट) ऊंची कोडगुल पहाड़ी क्षेत्र से निकलकर छत्तीसगढ़ में बिलासपुर में शिवरीनारायण से 13 किलोमीटर पहले महानदी में मिलती है. यह 290 किलोमीटर लंबी नदी है. यह महानदी की मुख्य सहायक नदी है. शिवनाथ नदी गंदे नाले में बदल चुकी थी. नदी के पानी के स्पर्श मात्र से घातक रोग हो रहे थे. पशु मर रहे थे. कृषि तबाह हो गई थे.शहर के बड़े नालों को नदी में छोड़ा जा रहा था. इस उपेक्षित और दुर्दशा ग्रस्त नदी को जन आस्था का केंद्र बनाया

गया, "शिवनाथ बचाओ" आंदोलन हुआ, हर पूर्णिमा को शिवनाथ महाआरती की पहल की गई और इसके तट पर पौधारोपण किया गया. इस प्रकार नदी का संरक्षण किया गया.

केरल की एक छोटी सी 18 किलोमीटर लंबी नदी मम्पूझा का जल एक समय में स्वच्छ था. मम्पूझा नदी चेरुकुलथूर से निकलती है और पेरूवायल, पेरुमन्ना, ओलवांना पंचायतों से गुजरती हुई कल्लई नदी से मिलती है. इसके किनारे पर दुकानें थी. प्लास्टिक के बढ़ते प्रयोग से धीरे–धीरे नदी प्लास्टिक की बोतलों, कूड़ा करकट से भर गई. जो नदी 30 साल पहले तक कोझीकोड के कई गांवों में यातायात, व्यापार का साधन थी, उसके मृत प्रायः हो जाने के बाद उसे पुनर्जीवित करने की कोशिश की गई. उसके किनारे बांस के पौधे रोपे गए.

मणिपुर की राजधानी इंफाल का इमा कैथल अर्थात मां का बाजार महिलाओं द्वारा ही संचालित होता है. यहां पास में नांबुल नदी बहती है. पानी की उपलब्धता होने से नदी की ताजी मछलियां खरीदने लोग यहाँ आते थे. नदी में परिवहन भी होता था. लेकिन पॉलिथीन बैग और प्लास्टिक के सामान का इस बाजार में चलन होने से प्लास्टिक कचरा धीरे–धीरे नदी में पहुंचता रहा. नदी की गंदगी, बदबू, पॉलिथीन और पानी की बोतलों के अंबार के बीच नदी से मछलियों की कई प्रजातियां विलुप्त हो गईं. नदी के किनारे पैदा होने वाली साग सब्जी उगनी बंद हो गईं फसलें प्रभावित हो गईं यह नदी मणिपुर की जीवन रेखा है. शहर के पेयजल का मुख्य स्रोत है. जिसको कूड़ा करकट डालकर नष्ट कर दिया गया. समुद्र तल से लगभग 2,000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित कांगचुप पर्वतमाला से निकली यह नदी विश्व प्रसिद्ध एकमात्र तैरते नेशनल पार्क व गांवों वाली लोकटक झील में मिलती है. नांबूल नदी में बहुत सी सरिताएं भी अपना जल देती हैं. अब नदी की सफाई के लिए पॉलिथीन पर पाबंदी और कूड़े के सही तरीके से निस्तारण के लिए लोगों में जागरूकता आई है और इसे चुनाव का एक मुद्दा भी बना दिया गया है.

बस्तर क्षेत्र की इंद्रावती नदी का उद्गम उड़ीसा राज्य में डोंगराला पहाड़ी पर 3,000 फीट की ऊंचाई पर है. पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है यह नदी छत्तीसगढ़ राज्य में प्रवेश कर छत्तीसगढ़– महाराष्ट्र– तेलंगाना राज्य की सीमा पर भद्रकाली नामक ग्राम के समीप गोदावरी नदी में मिलती है. लगभग 500 किलोमीटर लंबी इस नदी पर चित्रकूट जलप्रपात है जिसे भारत का नियाग्रा कहा जाता है. इंद्रावती के किनारे इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान भी है. जबरदस्त जल दोहन, रेत उत्खनन इत्यादि विभिन्न कारणों से नदी में पानी कम होता जा रहा है और मैदानी भाग बढ़ता जा रहा है. पूरे वर्ष लहराता भरा – पूरा नदी का बहाव भी कम हो गया है. इंद्रावती को बचाने के लिए सैकड़ों लोग एकजुट होकर पद यात्रा निकाल रहे हैं इसके संरक्षण के प्रयास शुरू कर दिए गए हैं.

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर की जीवनदायिनी अरपा नदी के संरक्षण के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं. पेंड्रा में स्थित लगभग 100 किलोमीटर लंबी यह नदी बरसात के दिनों में नजर आती है. अन्य दिनों में यह जमीन के नीचे बहती है. इस नदी का उद्गम खेतों से होता है लेकिन इसके उद्गम स्थल की जमीन पर कब्जा होने से नदी के अस्तित्व पर संकट आ गया है. अरपा नदी के किनारे पौधारोपण किया गया. भीषण गर्मी व घटते जलस्तर से चिंतित वहां के युवाओं ने ही 'अरपा अर्पण महा अभियान' चलाया. इसके तट पर पीपल, बरगद, आम, नीम, अर्जुन के पौधे लगाए. बाद में इसके संरक्षण के लिए सरकारी प्रयास आरंभ हुए, इसके उद्गम स्थल की सफाई का कार्य आरंभ हो गया है.

पवित्र यमुना की सहायिका नदियों में से एक हिंडन नदी हमारे देश की सबसे प्रदूषित नदियों में से एक है. हिंडन नदी टांका गांव में शिवालिक पर्वतमाला से शुरू होती है. यह लगभग 300 किलोमीटर लंबी है और उत्तर प्रदेश के 6 जिलों से गुजरती हुई यह नदी गंदगी ही ढोती है. हिंडन नदी के भयावह प्रदूषण की वजह से इसके आसपास का भूजल प्रदूषित हो चुका है. आसपास के सैकड़ों गांवों में जन–जीवन पर खतरा मंडरा रहा है और सैकड़ों बीमारियां सिर उठा रही हैं जिसके चलते बागपत में 500 से अधिक हैंडपंप उखाड़ने के निर्देश राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने दिए थे. राष्ट्रीय हरित अधिकरण के निर्देश पर हिंडन नदी को सदानीरा बनाने का प्रयास हो रहा है.

सहारनपुर के पास कैनाल बनाकर यमुना से हिंडन में पानी पहुंचाया जाएगा और यमुना नदी को लबालब करने के लिए हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखंड में 3 बांध बनाए जाएंगें मेरठ के पूर्व कमिश्नर डॉ प्रभात कुमार ने हिंडन नदी को निर्मल और अविरल बनाने के लिए मुहिम चलाई थी जिससे हिंडन नदी के कई किलोमीटर के हिस्से को श्रमदान द्वारा साफ किया गया. हिंडन नदी की एक सहायक नदी सहारनपुर की पाँवधोई नदी भी प्रदूषित हो चुकी थी. नदी के दोनों तरफ रहने वाले लोगों ने समितियां बनाकर नदी को साफ करने व नदी की रखवाली करने की जिम्मेदारी उठाई ताकि फिर से कोई नदी में गंदगी ना डाल पाएं हजारों ट्रक कचरा, गंदगी, मिट्टी व गाद निकालकर नदी को साफ किया गया. लोगों की समझ में आ गया था कि अगर नदियां नहीं होंगी तो भविष्य में कुछ भी नहीं रहेगा. इनको साफ करना, रिचार्ज करना और प्रदूषण से बचाना बहुत जरूरी हैं.

मुजफ्फरनगर जिले के अंतवाड़ा से निकलती पूर्वी काली नदी भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में से एक है. काली नदी के किनारे बसे 44 गांव में दूषित पानी आता है जिस कारण यहां पाइपलाइन से पेयजल आपूर्ति का कार्य करोड़ों रुपए खर्च करके किया जा रहा है. इस नदी को उद्गमस्थल से ही साफ करने का कार्य शुरू हो चुका है. यहां 8 फीट की खुदाई पर जलधारा फूटी है. यही काली नदी का उद्गम है, जो 1992 तक देखा जा सकता था. बाद में काली नदी वहां से लुप्त हो गईं. बलखाती इस नदी को नागिन कहा जाता है. 1999 में केंद्रीय भूजल बोर्ड ने काली नदी में प्रदूषण से होने वाली बीमारियों व भूजल दूषित होने के तथ्य सामने रखे थे. लगभग 300 किलोमीटर लंबी यह नदी मेरठ, गाजियाबाद, बुलंदशहर, अलीगढ़, एटा, फर्रुखाबाद और कन्नौज जिलों से गुजरती हुई गंगा नदी में मिल जाती है.

उत्तर प्रदेश में गोमती की 22 सहायक नदियों में से मुख्य भैंसी नदी जो कि 30 सालों से निर्जल हो चुकी थी उसे शाहजहांपुर जिले में नदी किनारे बसे पचास गांवों के लोगों ने जिंदा किया. नदी की खुदाई की, सफाई की और प्रवाह क्षेत्र को अतिक्रमण मुक्त किया.

पंजाब के होशियारपुर जिले में बहती काली बेन (काली बेरी) नदी सिखों की एक बहुत ही पवित्र नदी है और गुरु नानक देव से संबंधित है. यह नदी अपने आसपास के गांवों व शहरों के सीवेज व फैक्ट्रियों के जहरीले गंदे पानी से गंदे नाले में बदल गई थी. इसे एक सिख संत के प्रयासों व जन सहयोग से एक निर्मल नदी में बदल दिया गया है. हालांकि इसमें वर्षों की मेहनत लगी है.

राजस्थान के अलवर जिले की दो नदियों रूपारेल व भगाणी को भी पुनर्जीवित किया गया. राजस्थान सबसे कम वर्षा वाला क्षेत्र है. यहां पर अधिकांश नदियां बरसाती ही हैं. रूपारेल नदी प्राचीन काल से ही प्रमुख नदियों में से एक है. पहाड़ी क्षेत्र से निकल कर यह नदी समतल मैदान में आती है. इसके जलागम क्षेत्र (जिन क्षेत्रों से नदी में जल आता है) में 80 के दशक में पानी का अभाव हो गया था. अतः नदी धीरे–धीरे सूख गयी और इसके क्षेत्र में अकाल पड़ने लगा. तब नदी के जलागम क्षेत्र में स्थानीय लोगों ने जल पुरुष श्री राजेंद्र सिंह जी की प्रेरणा से जोहड़ बनाने शुरू किए. इस तरह बरसात होने पर पानी उनमें रुका इससे जहां वन्यजीवों को पीने का पानी उपलब्ध हुआ वहीं जंगल में हरियाली बढ़ी और रूपारेल नदी पुनर्जीवित हो गई. राजस्थान में अरावली की पर्वतमाला में स्थित सरिस्का की खूबसूरत और हरी–भरी ऊंची पहाड़ियों के बीच भगाणी नदी पत्थरों पर से होती हुई तेजी से बहती है. अलवर जिले की यह नदी वहां स्थित मानसरोवर बांध को भरती है और सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान में बहती है. अपने उद्गम के शुरुआती गांव में जोहड़ न होने से वर्षा का अधिकतर पानी नालों में बह जाता था और उपजाऊ मिट्टी का क्षेत्र होने के बावजूद यहां साल दर साल सूखा पड़ता था, फिर लोग जागरूक हुए. उन्होंने गांव–गांव जाकर 'जोहड़ बनाओ, पानी बचाओ' का नारा दिया. लोगों ने कड़ी मेहनत कर पानी के संरक्षण का कार्य आरंभ किया. एक के बाद एक सैकड़ों जोहड़–बांध–एनीकट बनते चले गए. परिणाम स्वरूप नदी सतत बह निकली.

मध्य प्रदेश के इंदौर से 20 किलोमीटर दूर कनाडिया गांव में ग्रामीणों ने गांव की कनकावती नदी पर छोटा बांध बनाकर उसका पानी रोका. नदी को गहरा कर

मॉनसून की बारिश आने के पहले ही नदी में पानी रोकने की तैयारी कर ली. इससे पहले गांव में सिर्फ एक नलकूप ही पानी दे रहा था बाकी सब सूख गए थे. अब नदी में भी पानी है व भूजल स्तर भी बढ़ा है. 150 से ज्यादा बोरिंग रिचार्ज हो गई है और दो–तीन बारिश में ही नदी में पानी रुक गया है. नदी से निकली मिट्टी द्वारा गांव की खाली जमीन में भराव कर बगीचा बनाने की भी तैयारी है.

मध्य प्रदेश के देवास में मृत काली सिंध नदी पुनर्जीवित की गई है. कभी सदानीरा हुआ करती यह नदी उपेक्षा के कारण उबड़ खाबड़ बंजर में तब्दील होकर सूख गई थी. प्रशासन व जनप्रतिनिधियों की अनदेखी से नदी में पांच से दस फीट तक गाद जमा हो गई थी और आसपास के गांवों में जल संकट गहरा चुका था. गांव के युवाओं ने इसके उद्गम स्थल बरझाई में नदी की सफाई की और हजारों ट्रॉली गाद नदी से निकाली जिस कारण पहली बारिश में ही नदी में पानी आ गया. 45 साल पहले लखनदेई नदी जोकि नेपाल से बिहार के सीतामढ़ी में सोनबरसा प्रखंड के कन्हौली में प्रवेश करती है उसका प्रवाह रुक गया था और नदी सूख गई थी. सोनबरसा की संघर्षरत जनता ने नदी को नया जीवन दिया. नदी के दोनों किनारों पर अतिक्रमण व गंदगी के चलते इसके रुके हुए प्रवाह को 'लखनदेई बचाओ संघर्ष समिति' के प्रयास से पुनः प्रवाहमान किया गया.

उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में फैले चित्रकूट की मंदाकिनी नदी से एक युवा ने टनों कचरा निकाला जिसमें जलीय घास, पूजन सामग्री, जानवरों के शव, पॉलीथीन का कचरा शामिल था. यहां राजा घाट से ही जिले के लिए पानी की सप्लाई होती है और यहीं नाली से हजारों लीटर गंदगी नदी में गिर रही थी. मंदाकिनी तट पर पौधारोपण का कार्य और तटवर्ती खेतों में रासायनिक खाद व कीटनाशक का प्रयोग बंद करने के लिए भी कदम उठाए जा रहे हैं. उत्तर प्रदेश में सिंचाई विभाग ने गोमती और वरुणा समेत कई मृतप्रायः नदियों को सदानीरा बनाने के लिए आम लोगों के श्रमदान से नदियों से गाद निकालने का काम आरंभ किया था. गोमती नदी को उसके उद्गम स्थल पीलीभीत में 48 किलोमीटर से ज्यादा साफ किया जा चुका है. इसी तरह आंवला (बरेली) में अरिल नदी, हरदोई की सई, फैजाबाद की तमसा और बदायूं की सोत नदी की भी सफाई के साथ–साथ गहरा करने की योजना पर काम चल रहा था. पर्यावरण विभाग ने रोक लगा दी है और कहा है कि बिना पर्यावरणीय एनओसी के किसी भी नदी की खुदाई नहीं हो सकेगी. आशा है इसका समाधान हो चुका होगा.

झांसी के मऊरानीपुर में सदियों पुरानी सुखनई नदी जबरदस्त बालू खनन और नदी में बढ़ती काई, सिल्ट व गंदगी के कारण, पूरी तरह सूख चुकी है इसलिए उस इलाके के लोगों मुश्किलों का सामना करना पड़ा. भारी वर्षा के समय इसमें पानी का प्रवाह रहता है.

बरेली, बदायूं, रामपुर से गुजरने वाली दर्जनों गांवों को सिंचाई के लिए जल उपलब्ध कराने वाली अरिल नदी विलुप्ती की स्थिति में पहुंच चुकी है.नदी के सूखे बहाव क्षेत्र में अतिक्रमण कर खेती की जा रही है. नदी अपना जल रामगंगा नदी में देती है. नदी के संरक्षण के लिए नदी के तट पर पौधारोपण व आसपास के तालाबों को भी संरक्षित करने की योजना है. बरेली में लोगों ने अरिल नदी में श्रमदान से कई किलोमीटर सफाई की.

उत्तराखंड राज्य के पौड़ी जिले में पहाड़ियों के शिखर से निकली मालिनी नदी कोटद्वार, बिजनौर, नजीबाबाद होते हुए, खोह नदी में मिलती है, खोह नदी रामगंगा नदी में, और रामगंगा नदी, गंगा नदी में मिल जाती है. जीवनदायिनी मालिनी का जलस्तर भी विलुप्ति की ओर अग्रसर है. इसके संरक्षण के प्रयास भी किए जा रहे हैं 'नमामि–गंगे' की तर्ज पर ही शुरू हुआ है नजीबाबाद (बिजनौर) में 'नमामि मालिनी' अभियान. प्राचीन नदी को बचाने व उसे निर्मल करने के लिए नदी से कूड़ा निकाला गया. नीर विहीन नदियों को विलुप्त होने से बचाने के लिए तथा पुनर्जीवित करने के लिए उनके उद्गम स्थल को विकसित करने की योजना है. अपने क्षेत्र और स्वरूप में काफी महत्व रखती हुई अनेक नदियां अपना अस्तित्व खो चुकी हैं या बरसाती बनकर रह गई हैं. नदियों को अतिक्रमण मुक्त करके साफ सफाई करके उनके जल वहन की क्षमता को बढ़ाना और स्वच्छ जल के स्रोत से इनमें जल की व्यवस्था कराना अति आवश्यक है. नदी में पानी

होने से भूगर्भीय जल के निरंतर गिरते स्तर की समस्या भी कम हो जाएगी. नदियों के किनारे पौधारोपण की कार्ययोजना भी सरकार द्वारा तैयार की जा रही है. उत्तर प्रदेश की गोमती, सोत, आमी, मनोरमा, तमसा, वरुणा, सई और अरिल नदियों को पुनर्जीवित करने की कवायद शुरू हो चुकी हैं. नदियों के संरक्षण के लिए अनेक जल योद्धा व सामाजिक कार्यकर्ता संघर्षरत हैं और उनका सहयोग जनसाधारण भी कर रहा है और इसी से कुछ नदियों को जीवनदान मिला है. नदी को एक जागृत स्वरूप, भारत की पहचान और अमूल्य धरोहर के रूप में संरक्षण प्रदान करना होगा क्योंकि कुछ नदियों का तो अस्तित्व ही नहीं बचा, वे नदियां किताबों व कहानियों तक सीमित हो गई है. नदियां बहती रहेंगी तो जिंदगी चलती रहेगी.

'काकली भवन', 120–B, साकेत, सिविल लाइंस,
सेन्ट ल्यूक अस्पताल के सामने,
मेरठ – 250003 (उत्तर प्रदेश)

*****

जलवायु और मानव स्वास्थ्य

डॉ दया शंकर त्रिपाठी

हजारों वर्षों में मानव जाति का उष्णकटिबंधीय प्रदेशों से लेकर ठंडे आर्कटिक तक, रेगिस्तानों, दलदलों और पहाड़ों तक में हस्तक्षेप हो गया है. मानव के जीवन और स्वास्थ्य पर जलवायु और मौसम ने बड़ा प्रभाव डाला है. मानव शरीर एक सीमा तक ही जलवायु के परिवर्तन को बर्दाश्त कर सकता है. मौसम के अल्पकालिक उतार–चढ़ाव स्वास्थ्य की गंभीर समस्याएँ खड़ी कर सकते हैं. गर्मी में लू से और शीत ऋतु में शीतलहर से अनेक मौतें होती हैं. जलवायु मच्छरों से रोगों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ये रोग वाहक तापमान, वर्षा और पवन जैसे जलवायु के प्रत्यक्ष प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं. मलेरिया का संक्रमण जलवायु और मौसम के प्रति विशेष संवेदनशील होता है. मौसम की असामान्य दशाएँ जैसे– अतिवृष्टि, अनावृष्टि, आदि मच्छरों की संख्या बढ़ाकर महामारी ला सकते हैं. रेगिस्तानों में और पठारी सीमाओं पर मलेरिया के संक्रमण में स्थायित्व नहीं होता. मौसम की दशाएँ अनुकूल न हों तो ऐसे क्षेत्रों में गम्भीर महामारी फैल सकती है. किसी व्यक्ति या जनसंख्या का स्वास्थ्य शारीरिक, जैविक, राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों की जटिल अंतर्क्रियाओं पर आश्रित है. विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वास्थ्य की परिभाषा, 'पूर्ण शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक कल्याण की एक अवस्था एवं रंचमात्र भी रोग या दौर्बल्य का अभाव' के रूप में किया है. गत वर्षों में समताप मण्डल के ओजोन परत की क्षति, जैवविविधता का ह्रास, जल–संसाधनों का प्रदूषण तथा मृदाक्षरण (अवक्रमण) के साथ–साथ वैश्विक पर्यावरणीय परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है.

हमारे पर्यावरण के सभी घटक अंततः मानव स्वास्थ्य को ही प्रभावित करते हैं अतः पूर्वोक्त एवं अन्य वैश्विक पर्यावरणीय परिवर्तनों के कारण मानव जनसंख्या का स्वास्थ्य एवं उनका कल्याण प्रभावित होने लगा है. विगत वर्षों में ओजोन परत का क्षय पराबैंगनी–बी विकिरण को पृथ्वी सतह तक पहुँचाने वाली महत्वपूर्ण वृद्धि की दिशा में प्रवृत्त हुआ है. वैज्ञानिक प्रेक्षणों में पाया गया है कि पराबैंगनी–बी विकिरण भी मानव एवं पशु स्वास्थ्य पर मुख्यतः त्वचा, नेत्र तथा प्रतिरक्षण प्रणाली को क्षति पहुँचाने वाले परिणामों के लिए उत्तरदायी है. पराबैंगनी विकिरण के सक्षम मानव की स्थिति, उसके स्थान (अक्षांश एवं ऊँचाई), बाह्य क्रियाकलापों में बिताये गये समय की अवधि एवं समय निर्धारण जैसे दिन का समय, वर्ष की ऋतु तथा सुरक्षा के लिए अपनाये गये उपाय, जैसे– धूप से सुरक्षित रखने वाला आवरण, धूपी चश्मा या संरक्षी वस्त्र पर निर्भर करता है. किसी व्यक्ति के त्वचा का रंग तथा उसकी उम्र पराबैंगनी–बी विकिरण के कारण प्रभावित हो सकती है और उसके परिणामस्वरूप उसके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है. आवासों से विसर्जित मल–जल में विभिन्न प्रकार के विषाणु, जीवाणु, परजीवी अण्डे एवं कृमि जैसे रोगजनक कारक उपस्थित रहते हैं. इस प्रकार के संदूषित जल में पीलिया, विसूचिका, आंत्रज्वर, अमीबा, रुग्णता आदि जैसे रोगयुक्त जल के रोगाणु उपस्थित हो सकते हैं उच्च सांद्रतायुक्त धातु का प्रदूषण स्वास्थ्य संबंधी गंभीर समस्याएँ पैदा करता है जैसे जापान में सन् 1952 में पारा धातु संदूषित मिनामाटा खाड़ी से प्राप्त की गई मछलियों को खाने के कारण मिनामाटा नामक रोग उत्पन्न हो गया. संदूषित जल में उपस्थित पारा के यौगिकों का परिवर्तन जैविक क्रियाओं द्वारा अत्यंत विषाक्त मिथाइल पारद में हो जाता है, जिससे शरीर के अंग–प्रत्यंग, ओष्ठ एवं जिह्वा की सुन्नता, कम सुनाई पड़ना, पागलपन तथा दृष्टि का धुंधलापन आदि संभव है. कैडमियम प्रदूषण के कारण इताई–इताई नामक रोग (आउच–पाउच रू जो हड्डियों एवं जोड़ों की दर्दयुक्त बीमारी है) तथा यकृत एवं फफेड़े का कैंसर हो सकता है.

हमारे देश में अनेक स्थानों पर उद्योगों एवं नगरपालिका क्षेत्रों का गंदा पानी और बहिःप्रवाह, मल–जल, नालियाँ तथा कृषि संबंधी अपवाहों के निस्पादन के कारण भू–जल प्रदूषण की गंभीर समस्या खड़ी हो गई है जैसे पेयजल में नाइट्रेट की अधिकता मानव स्वास्थ्य के लिए खतरनाक

तथा शिशुओं के लिए घातक भी हैं. यह रक्त में उपस्थित हीमोग्लोबीन के साथ क्रिया कर निरुद्देश्य (नान–फंशनल) मिथेमोग्लोबीन का निर्माण करता हे जो आक्सीजन प्रवाह में बाधा उत्पन्न करता है. इससे मिथेमोग्लोबिनेमिया नामक रोग उत्पन्न हो जाता है. इसे नील रोगग्रस्त शिशु संलक्षण भी कहा जाता है.

पेयजल में फ्लोराइड की अधिकता से दाँतों का क्षरण एवं विकृति पैदा हो जाती है. यह हड्डियों को कठोर करती है और जोड़ों में दर्द पैदा करती है. भारत में अनेक स्थान ऐसे हैं जहाँ का भूमिगत जल संखिया से संदूषित हो गया है. यह मुख्यतः पत्थर की आधार शिलाओं में प्राकृतिक रूप से विद्यमान संखिया के रिसाव के कारण होती है. भूजल का अत्यधिक दोहन से मृदा एवं शिला स्रोतों से संखिया का विक्षालन प्रारंभ हो जाता है, जिससे यह जल दूषित हो जाता है. संखियायुक्त जल का लंबे समय तक उपयोग करने से काला पाँव (ब्लैक फूट) नामक रोग पैदा होता है. इसके अतिरिक्त यह अतिसार, बाह्य तंत्रिका शोथ एवं फेफड़े व त्वचा का कैंसर भी पैदा करता है. वाहकजन्य व्याधियाँ (वेक्टर बोर्न डिजीज) उसे कहते हैं जिसमें एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति तक रोगजनक सूक्ष्माणु या जीवाणुओं का संचरण संधिपाद या दूसरे कारकों के माध्यम से अथवा मध्यस्थ परपोषियों के रूप में क्रियारत प्राणियों के साथ होता है. यह संचरण तीन भिन्न–भिन्न प्राणियों के लक्षणों एवं उनकी आवश्यकताओं पर निर्भर करता है –

(१) नैदानिक कारक, जैसे– विषाणु, शुक्राणु, रोगाणु या आंत्रकृमि.

(२) सदिश, जो सामान्य रूप से संधिपाद होते हैं, जैसे मच्छर, खटमल, किलनी तथा मानव परपोषी, आदि.

(३) मध्यस्थ परपोषी, जैसे पालतू तथा वन्य पशु, प्रायरू रोगोत्पादक पदार्थ के भंडार के रूप में तब तक कार्य करते हैं जब तक अतिसंवेदनशील मानव जनसंख्या प्रभावित नहीं हो जाती है. सदिश बाह्य बीमारियों द्वारा संक्रमित होने के कारण विश्व की लगभग आधी जनसंख्या अतिरुग्णता एवं मृत्यु का शिकार हो रही है. सदिश वाहक बीमारियों के प्रभाव क्षेत्र का विस्तार उष्णकटिबंध या उपोष्णकटिबंध वाले क्षेत्रों में स्थित विकासशील देशों में अत्यधिक प्रभाव के अनुरूप नहीं होता है. मौसम के कारण सदिश जनसंख्या गतिकी (वेक्टर पापुलेशन डाइनैमिक्स) तथा रोग संचरण (डिजीज ट्रांशमिशन) को मुख्य चरों (की वैरिएबल्स) के रूप में समझे जाने वाले तापक्रम एवं आर्द्रता के साथ प्रभावित होता है.

अनुसंधानकर्ता यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि जलवायु–परिवर्तन किस प्रकार से सदिश बाह्य रोगों के प्रसार को प्रभावित कर सकता है. वैश्विक तापन के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभावों का व्यापक परिपेक्ष्य में कारक, सदिश, मध्यस्थ परपोषी तथा मानव परपोषी पर विचार किया जाना आवश्यक है. कैंसर के विभिन्न पक्षों पर अनुसंधान करने वाली अन्तर्राष्ट्रीय संस्था विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं अनेक सरकारी संस्थाओं ने डीजल निर्वातन (एक्जास्ट) अर्थात् डीजल के उपभोग के उपरान्त निकलने वाले पदार्थ को मनुष्यों के लिए संभावित वैंह्सरकारी पदार्थ माना है. इसमें 40 से अधिक वायु प्रदूषक पाये गये हैं और इनके प्रभाव से संभवतः पढ़ने वाले बच्चों में श्वाँस रोग की वृद्धि के रूप में देखा जा सकता है. डीजल से निसत ये पदार्थ दमा रोग को बढ़ा देते हैं तथा श्वाँस नली का प्रदाह उत्पन्न कर देते हैं संक्रामक रोग अतीत के अनेक संक्रामक रोग और भी भयानक रूप में वापस आए हैं. मलेरिया और टीबी जैसे रोगों पर कारगर नियंत्रण न हो पाने से लम्बे समय तक नियंत्रित रहने के बावजूद ये पुनः वापस आ गए हैं. जलवायु से संबंधित जो संक्रामक रोग नियंत्रण में थे उनके एकाएक पलटने के क्या कारण हैं. तपेदिक का इलाज तपेदिकमारक दवाओं से कारगर ढंग से किया जा रहा हैं. इन दवाओं से उन कीटाणुओं को मारा जाता रहा है जो यह रोग पैदा करते थे. प्राकृति उद्विकास की प्रक्रियाओं ने जीवाणुओं के नए प्रकारों को जन्म देकर उन्हें प्रतिरोध में समर्थ बना दिया है. ये रूपान्तरित जीवाणु अब तेजी से फैलने लगे हैं. इस तरह इस रोग का पुनर्जन्म हुआ है.

वैश्विक तापन (ग्लोबल वार्मिंग) के बढ़ने के साथ रोगों के तरीकों में परिवर्तन आते रहेंगे. इसके कारण मलेरिया, डेंगू, पीलाबुखार, मस्तिष्क ज्वर, आदि के वितरण में भी बदलाव आएगा. अधिक गर्म और नम जलवायु हैजा जैसे रोगों की भयानक महामारी फैलाएगी. संक्रामक रोगों के विस्तार में वैश्वीकरण की भी सहायक भूमिका है. इसमें तीव्र सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समायोजन जैसे समानान्तर परिवर्तन भी शामिल है. जहाँ वैश्वीकरण में एक ओर कुछ विशेष जन

समूह के जीवन स्तर को ऊपर उठाने की क्षमता है वहीं यह विकासशील देशों के आर्थिक क्षेत्रों में गरीब जनता के लिए आर्थिक असमानताएँ बढ़ाता है. वैश्वीकरण के वर्तमान युग में जहाँ एक ओर संक्रामक रोगों के नियंत्रण में सहायता मिलती है वहीं इन रोगों का विस्तार भी होता है. क्षय रोग (टीबी) – यह वायु से फैलने वाला एक संक्रामक रोग है. वे लोग जो फेफड़े के क्षय रोग से ग्रस्त होते हैं, संक्रामक होते हैं ये रोगी जब खाँसते, छींकते या थूकते हैं तो हवा में ये जीवाणु आ जाते हैं. इस हवा में साँस लेने वाला व्यक्ति इस रोग से ग्रसित हो सकता है. लम्बा बुखार, खाँसी और वजन में कमी इस रोग का मुख्य लक्षण है. इलाज न कराने की अवस्था में एक क्षय रोगी 10–15 व्यक्तियों को संक्रमित कर सकता है. संक्रमित व्यक्ति आवश्यक नहीं कि बीमार पड़े.

मनुष्य की प्रतिरक्षा प्रणाली में क्षयरोग के जीवाणुओं को वर्षों तक निष्क्रिय बनाए रखने की क्षमता होती है. व्यक्ति की प्रतिरक्षा प्रणाली जब कमजोर पड़ती है तो उसे इस रोग से ग्रस्त होने की संभावना बढ़ जाती है. मलेरिया – यह मच्छरों से फैलने वाला एक जानलेवा बीमारी है. मलेरिया का कारण प्लाज्मोडियम नामक एककोशीय परजीवी है जिसकी खोज 1880 में हुई थी. यह परजीवी एक से दूसरे व्यक्ति के

शरीर में मच्छर के काटने से पहुँचता है. गरीब देशों में रहने वाली विश्व की लगभग 40 प्रतिशत आबादी को मलेरिया का खतरा है. २०वीं सदी के मध्य में शीतोष्ण जलवायु वाले अनेक देशों में इसका उन्मूलन किया जा चुका था परन्तु अब यह फिर वापस आ गया है. मलेरिया का परजीवी एक मनुष्य के शरीर में तब प्रवेश करता है जब संक्रमित मादा एनाफिलीज उसे काटती है. मानव शरीर में इस परजीवी में अनेक परिवर्तन आते हैं मलेरिया के लक्षण मच्छर काटने के 9–14 दिन बाद प्रकट होते हैं इससे तेज बुखार, सरदर्द, बदनदर्द और उल्टी होती है. इलाज के अभाव में या परजीवी दवारोधक हों तो संक्रमण तेजी से बढ़कर जानलेवा हो सकता है. आज मलेरिया के परजीवी दवाप्रतिरोधी बनते जा रहे हैं. वर्षा के कारण ठहरे पानी अथवा जल जमाव की सफाई, मच्छरों की संख्या कम करता है. मच्छरदानी का प्रयोग मलेरिया से बचाव का सर्वोत्तम उपाय है. कारगर आधुनिक दवाओं से तत्काल इलाज होने से जिन्दगी बच सकती है. जल से उत्पन्न रोग – प्रदूषित जल से भी अनेक रोगों की उत्पत्ति होती है. पर्याप्त मात्रा में सुरक्षित पेयजल की आपूर्ति, मल–मूत्र के उचित निबटारे की व्यवस्था और स्वास्थ्य नियमों का पालन करने से जलजनित रोगों में कमी आ सकती है. जलजनित रोगों को चार श्रेणियों में बाँटा जा सकता है –१– जलजनित रोग – ऐसे रोग मनुष्यों और पशुओं के मल–मूत्र से, नगरों के गन्दे जल से अथवा उद्योगों और कृषि के रासायनिक अपशिष्टों से प्रदूषित जल में उत्पन्न होते हैं हैजा, दस्त, टायफाइड, पेचिश, पोलियो, मेनिन्जाइटिस और हिपेटाइटिस ए और ई, आदि रोग दूषित पेयजल के कारण उत्पन्न होते हैं नाइट्रेट की भारी मात्रा जब जल को प्रदूषित करती है तो रक्त संबंधी विकार पैदा होते हैं स्वच्छता में वृद्धि और शोधित पेयजल की व्यवस्था से इन रोगों के प्रसार में कमी आती हैं २– जल आधारित रोग – जो जलीय प्राणी अपने जीवन का एक भाग जल में और दूसरा मानव शरीर में व्यतीत करते हैं, अनेक रोगों के कारण बनते हैं भारत में गिनी कृमि पैरों को प्रभावित करता हैं गोल कृमि बच्चों की छोटी आँत को प्रभावित करते हैं ३– जल से संबंधित प्रसारण रोग – ठहरे पानी में पैदा होने वाले मच्छर मनुष्यों में मलेरिया और फाइलेरिया जैसे रोगों के कारण बनते हैं भारत में डेंगू और फाइलेरिया जैसे रोग का प्रसार भी इसी कारण ज्यादा है.

जल की दुर्लभता वाले रोग – जिन क्षेत्रों में जल और स्वच्छता की कमी होती है वहाँ क्षयरोग, कुष्ठ,टिटनेस, आदि रोगों का प्रसार ज्यादा होता है. अपने हाथों को ठीक से न धोने के कारण ये रोग उत्पन्न होते हैं अर्थात् जल की कमी आरोग्य की कमी का कारण बनती हैं

बी 2/63 सी –1 के, भदैनी,
वाराणसी – 221001
फोन– 91–9415992203

*****

वाहनों को कम उपयोग में लाएं, थोड़ी दूरी के लिए साइकिल या पैदल जाएं,
जीवन शैली में परिवर्तन लाएं, पर्यावरण को अनूकूल बनाएं.

पेड़ों को भी होता है दर्द

– डॉ. विनोद गुप्ता

मनुष्य सबसे बड़ा स्वार्थी जीव है. अपने साधन–सुविधा, शौक–मौज के लिए बेजुबान पेड़ों पर बेरहमी से कुल्हाड़ी चलाते उसे जरा भी दर्द नहीं होता, लेकिन शायद वह नहीं जानता या जानकर भी अनजान बन रहना चाहता है कि उसके इस तरह के व्यवहार से पेड़ों को कितना दर्द सहना पड़ता है. वे अपनी पीड़ा बयां नहीं कर सकते, इसका मतलब यह तो नहीं, कि कभी उन पर कील ठोंकी जाए या बैनर–पोस्टर, बिजली की लाइटें लगाकर उनकी सेहत को बिगाड़ा जाए अथवा उनको काटकर उनकी हत्या कर दी जाए. आखिर प्रकृति के खिलाफ इंसानों के इस जुल्म की सजा दोषी को मिलनी ही चाहिए अन्यथा एक समय ऐसा आएगा जबकि पेड़ ढूंढ़ने से नहीं मिलेंगे और भावी पीढ़ी अपनी संतानों को पेड़ों की तस्वीर दिखाकर ही बता पाएंगी कि पहले कभी पेड़ ऐसे हुआ करते थे.

पेड़ पर्यावरण के रक्षक हैं. यदि ये ही नहीं रहेंगे, तो पर्यावरण सुरक्षित कैसे रहेगा ? पर्यावरण के असंतुलन का परिणाम तो हम देख ही रहे हैं. इसके बावजूद पेड़–पौधों को उजाड़कर इंसान किस बुद्धिमता का परिचय दे रहा है ?

जिस तरह इंसान की हत्या करने पर हत्यारे का सजा दी जाती है, उसी प्रकार अकारण पेड़ों को क्षति पहुंचाकर या उन्हें काटने पर भी सजा का प्रावधान होना चाहिए क्योंकि जितनी जल्दबाजी या उतावलापन हम जंगल को उजाड़ने में बरतते हैं, उतनी ही उदासीनता नए पेड़–पौधों के लगाने में बरतते हैं. परिणामस्वरूप देश के जंगल वीरान हो रहे हैं. इससे वन्य जीवों का जीवन और अस्तित्व दोनों खतरे में पड़ गया है. इंसान को अपने स्वार्थ की चिंता तो है, लेकिन मूक जानवरों की नहीं. जंगल ही नहीं रहेंगे तो वन्य जीवों का क्या होगा ?

बात वर्ष 2017 की है. पूणे की एक पांच वर्ष की बच्ची अपने पिता माधव पाटिल के साथ कोलकाता में दीवाली की छुट्टियां बिताकर लौटी थी. एक दिन सुबह जब पिता गमलों में लगे मुरझाए पौधों को पानी दे रहे थे, तब उसने पूछा, "पापा, यह पौधा मुरझा क्यों गए?" पिता ने बताया, "हम कई दिनों तक इनमें पानी नहीं दे पाए हैं, इसलिए "हमने पेड़ों को मरने के लिए क्यों छोड़ दिया था ?" बेटी ने सहज रूप से पूछा. बेटी के सवाल ने पिता को विचलित कर दिया. उन्हें लगा कि यह बात मैंने क्यों नहीं सोची, जबकि मैं जानता हूँ कि पेड़ों में संवेदनाएं होती हैं.

दो–तीन महीने यूंही बीत गए. होली के दिन सड़क पर पेड़ों में ठोकी गई कीलों पर उनका ध्यान गया. बैनर, विज्ञापन, होर्डिंग लगाने के लिए इस तरह पेड़ों पर कीलें ठोकना उन्हें अच्छा नहीं लगा.

उन्हें अपनी बेटी की बात याद आई, कि हम क्यों पेड़ों को मरने छोड़ देते हैं. उन्होंने कीले निकालने के औजार खरीदें और काम शुरू कर दिया. शुरूआत उन्होंने पूणे के बड़गांव धायरी के पेड़ों से की. अब उनकी छुट्टियां पेड़ों से कील निकालने में ही बीतती है उनका कहना है कि पेड़ों की वेदना कम होनी चाहिए, इसलिए यह मुहिम जरूरी है. धीरे –धीरे उनके अभियान से उनकी यार–दोस्त भी जुड़ने लगे. पिछले दो साल में ही पूणे, मुंबई, भंडारा, नासिक जैसे शहरों को पेड़ों से हजारों कीलें निकालने का काम उनकी संस्था ने किया.

अब उनकी संस्था ने पेड़ों को कील–मुक्त करने की मुहिम चला रखी है. उनके प्रयासों से पिंपरी–चिंचवड़ के आयुक्त ने सार्वजनिक पेड़ों पर कीलें ठोंकने को अपराध घोषित कर दिया है. ऐसा करने पर 5000 रू. या तीन महीने की सजा हो सकती है.

ग्रेटर चेन्नई कॉर्पोरेशन ने सड़क किनारे लगे पेड़ों पर विज्ञापन, तार या लाइट्स लगाकर उन्हें नुकसान पहुंचाने वाले लोगों और निजी संस्थाओं पर 25,000 जुर्माना सहित 3 साल जेल की सजा का प्रावधान किया है. पेड़ों से विज्ञापनों को हटाने का निर्देश देते हुए चेन्नई कॉर्पोरेशन ने कहा कि पेड़ों पर कील ठोकना प्रकृति के खिलाफ है. इससे पेड़ों की उम्र कम होती है.

कॉर्पोरेशन के आयुक्त जी. प्रकाश के अनुसार, स्थानीय नागरिक पेड़ों पर विज्ञापन, होर्डिंग लगाने की शिकायत नम्मा चेन्नई एप और हेल्पलाईन (1913) पर भी कर सकते हैं. इस एप की शुरूआत नागरिक सुविधाओं में किसी भी तरह की अनियमितता की शिकायत करने के लिए की गई थी. इस मामले में वनस्पति विज्ञान विशेषज्ञों का कहना है कि पेड़ों पर कीलें ठोकने और उन पर लाईट लगाने से उन्हें कई तरह के रोग हो सकते हैं. उनके बढ़ने पर भी असर पड़ता है. इससे भले ही पेड़ बाहर से सेहतमंद दिखें, पर अंदर से खोखले होते जाते हैं. पेड़ों पर लाईट लगाने से उनकी फोटोसिंथेसिस प्रक्रिया रात को होने लग जाती है. उनकी प्रजनन क्षमता पर भी असर पड़ता है. इसके अलावा, इन लाइट और होर्डिंग से वाहन चालकों को परेशानी होती है.

शहर की संस्था निझल ने 'फ्री द ट्री' अभियान भी चला रखा है. इसमें पेड़ों को मुक्त करने, नए पौधे लगाना, उनकी देखभाल करना, जैसे काम करवाए जाते हैं. संस्था लोगों को जागरूक भी करती है. संस्था के कार्यकर्ता शहर भर में पेड़ों से बैनर, पोस्टर, कीलें और लाइटें हटाते हैं. संस्था की प्रमुख शोभा मेनन ने बताया कि इस फैसले से पेड़ों की सेहत सुधारने में बड़ी मदद मिलेगी.

मद्रास हाईकोर्ट ने कॉपोरेशन को पेड़ों की कील, विज्ञापन लगाने वालों और इन पर केबल–तार ले जाने वालों पर कार्रवाई के मामले में हलफनामा दाखिल करने को कहा था. यह आदेश एक जनहित याचिका पर दिया गया था, जिसमें कहा गया था कि पेड़ों की हालत खराब करने वालों पर कड़ी कार्रवाई करने में कार्पोरेशन और पुलिस विफल रही है.

झारखंड में जमशेदपुर पूर्वी के गोलमुरी इलाके में जब आप सड़क से गुजरेंगे तो बरबस नजरें कुछ पेड़ों पर टिक जाएंगी. तार की जाली से घेरे गई इन पेड़–पौधों के बाड़े पर भगवान नाम लिखे हुए हैं. इन पेड़ों को भगवान के उन्हीं रूपों का प्रतीक माने जाने की भी अपील की गई है. खास बात यह है कि पेड़ों के भगवान के नाम से नामकरण में यहां सर्वधर्म सद्भाव भी दिखता है. राम, कृष्ण, रहीम, गुरूनानक देव, गुरू गोविन्द सिंह और रविदास के रूप में ये पेड़–पौधे पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दे रहे हैं. जमशेदपुर के समरजीत सिंह चावला पिछले कई वर्षों से पेड़–पौधों का संरक्षण और संवर्धन कुछ इसी अंदाज में कर रहे हैं.

*****

– 43/2, सुदामानगर,
रामटेकरी, मन्दसौर (म.प्र.) 458001

पेड़ लगाओ–पेड़ लगाओ, इस दुनिया को सुंदर बनाओ,
पेड़ो के नष्ट होने से बचाओ, चलो अपना अब फर्ज निभाओ.

स्वच्छ जल स्वस्थ जीवन

–डॉ. दयानाथ सिंह ''शरद''

इतना तो सत्य है और यह पूर्णतः निर्विवादित भी है कि जल के बिना जीवन और जीवन जीने की बात बेमानी है, मूल्यहीन है और साफ व स्पष्ट कहा जाए तो संपूर्ण विश्व की जल के बिना कोई अर्थव्यवस्था ही नहीं. वह भी स्वच्छ जल के अभाव में स्वस्थ जीवन तो एकदम संभव ही नहीं. यह सबको पता है कि जल ही जीवन है. जल नहीं तो जीने की बात करना व्यर्थ है. जीवन के लिए जल उतना ही आवश्यक है, जितना सांस लेने के लिए ऑक्सीजन, दोनों अन्योनाश्रित हैं. इसके साथ ही एक शर्त और है, वह यह कि हवा और पानी स्वच्छ, अप्रदूषित एवं ग्राह्य हो. अन्यथा वह अस्वस्थ कर मृत्यु का कारण होता है. नाना प्रकार के रोगों का संवाहक बना वह जल स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं और यह भी पता होना चाहिए कि स्वच्छ जल में औषधीय गुण होता है जिस प्रकार अस्वस्थ और बीमार व्यक्ति को औषधि दी जाती है, उसी प्रकार जल भी यथास्थिति आवश्यकतानुसार स्वच्छ, शीतोष्ण, उबाल कर एवं उपचारित कर पीने की सलाह दी जाती है.

वर्तमान दौर में यदि देखा जाए तो पानी पीने के लायक रहा ही नहीं वह अपनी गुणवत्ता या तो खो चुका है, अथवा खोता जा रहा है. इसके लिए हम मानव ही जिम्मेदार हैं. पानी के साथ ही साथ पर्यावरण को भी दूषित करने वाले हम मानव कहे जाने वाले तथा कथित लोग ही हैं. नदी, नाला, कुआं, तालाब और नलकूप जल आदि सभी प्रदूषण की मार झेल रहे हैं. यहाँ लगे हाथ अपने शहर और जिला वाराणसी की थोड़ी चर्चा कर लेना समीचीन होगा और सार्थक भी है, न कि हांडी के एक चाव माथ से पूरी हांडी के चावल (भात) का पता चल जाता है. वैसे ही जिले रूपी हांडी से राष्ट्रीय हांडी की क्या दशा, अवदशा और दुर्दशा है पता चल जाएगा. वाराणसी का वायुमंडल प्रदूषण से बखूबी प्रभावित होने लगा है. यहाँ तक कि बरसात का पानी भी अब शुद्ध नहीं रहा. कहने को शोध परक कार्यवाही चल रही है. नया–नया शोध भी हो रहा है. आगामी समयों में कुछ और क्या होने की संभावना है अथवा क्या हो सकता है, क्या किया जा सकता है पर सब 'ढाक के तीन पात' ही है. वाराणसी के वायुमंडल में अम्लीय कणों का दुष्प्रभाव देखा जा रहा है. इसका प्रमुख कारण है अंधाधुंध मोटर वाहनों का प्रयोग, उसमें प्रयोग होने वाला पेट्रोल और डीजल के जलने तथा कोयला आदि के जलने से निकलने वाला धुआं, काशी हिंदू विश्वविद्यालय और दिल्ली के पर्यावरणीय वैज्ञानिकों ने अपने शोध में वायुमंडल में अम्लीय कण लगभग 14–15 प्रतिशत पाया है. इसके साथ ही धूल–कण से बढ़ा नाइट्रेट एवं क्षारीय कण लगभग 85–86 प्रतिशत है. इसके लिए प्राकृतिक कारणों की अपेक्षा हम मनुष्य लोग ही अधिक जिम्मेदार हैं. एक और रिसर्च के मुताबिक तथ्य सामने आया है, कि बरसात के पानी में शहर का जहर भी घुलने लगा है. साल–दर–साल इसमें वृद्धि हो रही है. इस पर यदि अंकुश नहीं लगा और हम मात्र खाली–पीली फूटा नगाड़ा पीटते रहे, हम संवेदनशील ढंग से सक्रिया नहीं हुए तो इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है कि निकट भविष्य में आकाश से गिरने वाली पानी बूंदें हम तक आते–आते तेजाब बन जाएंगी. सोचिए जरा तब क्या होगा? क्या होगी हमारी हालत? यह यक्ष प्रश्न जैसा है.

पर्यावरण को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला यदि कोई प्रमुख कारण है तो वह है ग्लोबल वार्मिंग, भूमंडलीय तापक्रम इसलिए पर्यावरण और जल का अन्योनाश्रित जोड़ तोड़ है. अतः ग्लोबल वार्मिंग यानी भूमंडलीय तापक्रम पर थोड़ी चर्चा करें और इसके कारणों पर ध्यान दें, जो न्यायसंगत जान पड़ता है. पृथ्वी के तापक्रम में वृद्धि और इसके प्रभाव से मौसम में होने वाले परिवर्तन को ही ग्लोबल वार्मिंग के रूप में पारिभाषित किया गया है, जो सही है. आसान शब्दों में कहें तो इसका आशय यह और इतनी ही समझा जाना चाहिए कि यह तापक्रम में हो रही वृद्धि है. जिसे सौ वर्षों के औसत तापमान पर एक डिग्री फॉरेनहाइट आंका गया है. यह एक अनुमान भर ही है. जिसके फलस्वरूप वारिश के क्रम अथवा चक्र में परिवर्तन. हिमखंडों और ग्लेशियरों के पिघलने, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि के साथ–साथ जीव–जंतु एवं वनस्पतियों, वनों, जलवायु आदि पर प्रभाव–स्वरूप आ सकता है. जोकि अब बखूबी दिखने भी लगा है.

यद्यपि ग्लोबल वार्मिंग की समस्या कितनी बड़ी व विकट है, यह आम आदमी इसे नहीं समझ पाता. इसीलिए इसकी जड़ तक जाने की जहमत कोई नहीं करता और इसे मात्र 'वैज्ञानिक परिभाषा' मान कर निजात पा लिया जाता है और तो और बहुतायत लोगों को यह लगता है कि विश्व को फिलवक्त कोई खतरा नहीं है. हमारे देश में भी भागमभाग में व्यस्त भारतीयों के लिए कोई अर्थ नहीं है. परंतु वैज्ञानिक इसको ले कर खासे चिंतित हैं. उनका तो यहॉं तक मानना है कि यह ग्लोबल वार्मिंग दुनियॉं की सबसे बड़ी एवं दुःखद त्रासदी होगी, जो निश्चित ही सत्य है. यह बेहद घुटनभरी तथा तड़पा देने वाली होगी. यह भी असत्य नहीं कि जब पृथ्वी का तापक्रम बढ़ेगा तब जल, जलवायु और पर्यावरण भला कैसे अछूता रह जाएगा? फिर हम मनुष्य और अन्य जीव–जंतु शुद्ध पानी के अभाव में कैसे स्वस्थ और सुखी रह सकते है? फिर तो सुखद और सहज जीवन की कल्पना ही मूर्खता होगी. अस्तु जल के संदर्भ में हम सबको अत्यधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है. इसके लिए क्या कुछ हमें करना चाहिए विचार करते हैं थोड़ा–

जल–प्रदूषण के विभिन्न कारणों में से जैसे गंदे नाले मरे पशुओं को बहाना, अधजले मानव–शवों को पानी में फेंकना, पशुओं को धोना, मल–मूत्र का त्यागना, फूल–माला प्लास्टिक फेंकना, साबुन से नहाना, कपड़ा धोना और उर्वरकों का अधिकाधिक प्रयोग जल को प्रदूषित करने में सक्रिय भूमिका का निर्वाह करते हैं. पहले तो हमें इस कुकृत्य को बंद करना होगा. साथ ही और लोगों को इस हेतु जागरूक करना होगा, कि वे सब भी जल को हर स्थिति में शुद्ध एवं निर्मल बनाए रखने में तत्पर रहें. भूल कर भी पानी को चाहे वह नदी, नाले, तालाब, कुंआ का हो अथवा झील व झरने का हो किसी भी दशा में उसे प्रदूषित न करें और न दूसरों के द्वारा होने दें. एक बात और है, वह यह कि आज की बेतहाशा बढ़ती जा रही आबादी के सामने जल की कमी ही बड़ी समस्या है. जो शनैः शनैः विकराल समस्या का रूप लेती जा रही है. साथ ही और कई समस्याएं उभरती जा रही हैं, जो चिंता का शबब बनती जा रही हैं. पर्यावरण के साथ मूर्खतापूर्ण खिलवाड़ और अनजाने परिहास का ही यह परिणाम है जो हम सबके सामने नंगा हो कर चिढ़ाने लगा है.

विश्व की अधिकतम जनसंख्या भरपूर स्वच्छ जल प्राप्त न कर पाने के संकट से गुजर रही है. इस त्रासद संकट से छुटकारा पाने के लिए, चाहे थोड़ा ही क्यों न हो वह, निवारण के मुख्य तीन बातों पर विचार एवं मंथन करना चाहिए और उस पर सार्थक कार्यवाही भी. पहला, यह कि हम जल का उपयोग किस प्रकार करते थे. दूसरा, भविष्य में कैसे उपयोग करना है और तीसरा, जल–संचय हेतु क्या कदम उठाएं? गहराई से विचार करें तो पता चलता है कि जल का उपयोग अभी

तक हम अनुशासित ढंग से नहीं करते थे और शायद आज भी नहीं कर रहे हैं. जल संरक्षण हेतु हमें इस पर कुछ एक कदम उठाने एवं क्रियान्वित करने की आवश्यकता जान पड़ती है, यथा गंदे जल का सिंचाई के लिए प्रयोग, वर्षा–जल को छत पर संरक्षित करना और छत पर टंकी बनाना, तदनंतर उस जल का उपयोग करना. गांव और शहरों में पहले तालाब हुआ करते थे जो अब नहीं है, और यदि हैं भी तो सूखे पेड़ हैं. जो आसपास पानी के स्तर को बनाए व बचाए रखने के साथ दैनिक उपयोग के काम आता था. आज उन्हें काट कर वहॉं मकान बना दिया गया है. किंतु आज पुनः तालाबों की आवश्यकता महसूस होने लगी है. हालांकि सरकार और सरकारी अमला अपना काम कर रहा है. जिसमें पानी या तो है नहीं, है तो बस नाम मात्र के हैं. हॉं, बंदर बांट कमाई भरपूर है. इसे भी ध्यान रखा जाए तो कुछ जल बचाया जा सकता है, जैसे बर्तन धुलते समय शेविंग करते समय, स्नान करते समय तथा कुछ अन्य कार्य में जैसे टॉयलेट में लगे फलश से कम से कम पानी का प्रयोग करें.

जल और जल संरक्षण पर पर्यावरण का खास प्रभाव पड़ता है. अतः पर्यावरण के प्रति जन–जागरण आवश्यक है. कटते वृक्षों के कारण भूमि की नमी लगातार कम हो रही है. जिससे भू–जल स्तर पर बुरा असर पड़ रहा है. इसलिए वृक्षारोपण कार्यक्रम में सघनतर जागरूकता लाने की आवश्यकता है. नदियों में गंदा पानी भूल कर भी न छोड़ें, न बहाएं जल संरक्षण को व्यापक अभियान की तरह सरकारी एवं गैर सरकारी दोनों स्तरों पर प्रचारित और प्रसारित करने की आवश्यकता है. ताकि छोटे, बड़े ग्रामीण, नगरीय सभी जन विषय की गंभीरता को समझें और अभियान में अपनी भूमिका निभाएं. इस हेतु केन्द्र और राज्य सरकारें कड़ा नियम बनाएं. क्योंकि भय बिनु होय न प्रीत' बहुत आवश्यक है. शिक्षा संस्थानों में युवा पीढ़ी को इस बाबत पता चलता रहे और वे सक्रिय बन सकें, इसलिए निरंतर प्रचार–प्रसार होते रहना चाहिए. भारतीय वाङ्मय अथवा और स्पष्ट कहा जाए तो भारतीय संस्कृति में तो प्रकृति/पर्यावरण व जल के विषय में विस्तार से और प्रचुर रूप से मिलता है. यहॉं तो जल को भी देवता कहा गया है. नदियों को जीवन दायिनी माना गया है. यही तथ्य है कि हमारी सभ्यताएं और संस्कृति बहुतायत नदियों के किनारे उनके आस–पास ही उपजीं, बसीं और वहीं से विस्तृत तथा समृद्ध हुईं.

वर्जनाहीन समाज और पतनोन्मुखी जीवन–शैली के चलते मूल्य भले ही बदल गए हों, किंतु प्राचीन संस्कृति आज भी नदियों, तालाबों और पोखरों के पानी को किसी भी तरह से प्रदूषित करने के पक्ष में तो कतई नहीं है.

नाप्सु भूमं पुरीष्र वाष्टोवनं सम्रत्सृजेत.

अमेध्य लिप्त मन्यद्वा लोहितंवा विषाणिवा.

अर्थात् पानी में मल–मूत्र, थूक या फिर किसी भी प्रकार का दूषित पदार्थ रक्त अथवा विष का विसर्जन नहीं करना चाहिए. हमारे यहॉं सूर्य को 'सूर्य देवो भवः' सूर्य देवता कहा गया है. वहीं पीपल को श्रीकृष्ण ने गीता में उद्‌घोष करते हुए यह स्थापित किया है कि 'अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्' अर्थात समस्त वृक्षों में मैं ही पीपल हूँ. इसी प्रकार गंगा मात्र एक नदी नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की संवाहिनी है. गंगा अंतः सलिला है, उसका वास हमारे हृदय में है. गंगा पाप, ताप और संताप हारिणी पुण्यतोया है. बावजूद इसके हम अपनी भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं को भूलते जा रहे हैं और तो और प्रायः हम पर्यावरण और जल को एक दूसरे का पराश्रयी/अन्योनाश्रित न समझे, दोनों का पृथक–पृथक अस्तित्व है, ऐसा समझते हैं. जब कि, सच यह है कि जल और पर्यावरण में से कोई एक प्रदूषण से प्रभावित

हुआ तो दोनों ही मानव जगत के लिए विषतुल्य अहितकर ही साबित होंगे.

आइए बस थोड़ा सा इस पर भी दृष्टिपात करते हैं, जिसके कारण पर्यावरण प्रभावित होता है. पावर स्टेशनों से 21.3 प्रतिशत, इंडस्ट्री से 16.8 प्रतिशत, यातायात और वाहनों से 15 प्रतिशत, खेती–किसानी के उत्पादों से 13 प्रतिशत, जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल से 14 प्रतिशत, रिहायशी क्षेत्रों से 10 प्रतिशत, बायोगैस जलने से 11 से 12 प्रतिशत और कचरा आदि जलाने से 3–4 प्रतिशत मात्रा में प्रकृति प्रभावित होती है. जिसका, मानव, जल, वातावरण (हवा), खान–पान और स्वस्थ्य पर सीधा असर पड़ता है.

आज हम वेदों, पुराणों, उपनिषदों और आध्यात्मिक उच्चतम उपदेशों को जो भारत वर्ष की अमूल्य घरोहर हैं, को उपेक्षित करते जा रहे हैं. आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ 'भाव प्रकाश निघंटु' में जल का विशद वर्णन किया गया है. जैसे जल के विभिन्न नाम उसके अन्याय गुण, भेद, कब, कितना, कैसा जल पीना चाहिए आदि. हम, मात्र जल के कितने नाम/पर्यायवाची हैं, जैसा कि भाव प्रकाश में उधृत किया गया है, कि हमारा इतिहास कितना समृद्ध, वैभवमयी, मानवीय गुण संपन्न एवं उन्नतविचार से समरस, संपृक्त रहा है. स्पष्ट कहा है 'सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे भवंतु निरामय' और हम इसी के समर्थक और पोषक हैं. जल के विषय (नामों के) में देखें, क्या–क्या नाम है– पानी, सलिल, नीर, किलाल, जल, अंबु, आप, वार, वारि, कं, तोय, उदक, जीवन, वन, अम्भः, अर्णः, अमृत तथा घनरस आदि. थोड़ी चर्चा इसके गुण पर भी कर लेते हैं. 'जल' श्रम को दूर करने वाला, क्लांति नाशक, मूर्छा व प्यास को मिटाने वालाः तंद्रा, वमन और विवंध को नष्ट करने वाला, बलकारक, निद्रा को दूर करने वाला, तृप्ति दायक, हृदय के लिए हितकर, अव्यक्त रसवाला, अजीर्ण हरण, सदा हितकारक, शीतल, लघु स्वच्छ, संपूर्ण मधुरादि रसों का कारण एवं अमृत के समान शास्त्रों में कहा गया है.

बहरहाल भविष्यत पीढ़ी के लिए बन रहे हृदय विदारक एवं अति पीड़ा जनित संकट का कारक एवं कारण क्या है, यह हम सभी को पता है. फिर मूक, बधिर और अति निष्क्रिय बने हुए हैं. झूठ–मूठ के संसदीय बहस और बेमतलब कुकुर झौं–झौं की तरह बातों के चकल्ल्स में उलझे–उलझाए समय गंवा रहे हैं. उसका शीलहरण और चीरहरण भर कर रहे हैं. अच्छा हो, कि हम जल/पेयजल की सीमित मात्रा जो संपूर्ण जल का मात्र 01 प्रतिशत ही है – में ही प्रयोग करें. इसका दुरूपयोग ही इसे बुरी तरह प्रभावित करता है. जल–प्रदूषण है इसके समाधान हेतु आने वाली पीढ़ी के लिए, उनके जीवन को सुखद, मंगलमय और आनंदमय बनाने के लिए हम सभी को, पूरे समाज..... पूरे राष्ट्र को एकमत एवं एकजुट होना होगा. वर्ना भावी पीढी हमें और हमारी गलतियों के लिए कभी भी नहीं और कतई नहीं क्षमा करेगी. अस्तुः ''करें हम जागृत चेतना को,

– अभयना, मंगारी,
वाराणसी (उ.प्र.) 221202

*****

मत करो मुझको बर्बाद, इतना तो तुम रखो याद.
प्यासे ही तो रह जाओगे, मेरे बिना ना जी पाओगे.

हिन्दी का 'परचम लहरायें'

—एस. सी. त्रिपाठी

आओ— सब मिल हिन्दी को, विश्व (जग) भाषा बनायें,
राजभाषा हिन्दी का हम, परचम लहरायें.
जन—जन को संदेश ये दे दो, हिन्दी सबसे प्यारी है,
13 स्वर 36 व्यंजन हैं, इसकी महिमा न्यारी है.
हिन्दी की बिन्दी की भैया,
शोभा बड़ी निराली है.
सुर—तालों से सजल हुई,
ये अमृत—रस की प्याली है.
रस भी इसमें छन्द भी इसमें, गायन में अति प्यारी है,
मोहन की मुरली है इसमें, राधा की छवि प्यारी है.
ढोल—नगाड़ों की तालों पर
थिरक —थिरक कर मन झूमे
मस्त—मगन हिन्दी में गायें
धरती का कण—कण चूमें
ज्यूँ बगिया में खुश होकर, भंवरे गुन—गुन गाते हैं,
वैसे ही सब भाषा—भाषी, हिन्दी मिल—जुल गाते हैं.
पूरब—पश्चिम, उत्तर—दक्षिण,
सबको हिन्दी भाती है.
सरल बड़ी है भाषा इसकी,
समझ में जल्दी आती है.
सब देशों में हिन्द निवासी, भारत की जय कहते हैं.
देवनागरी हिन्दी का वे, अमृतमय—रस पीते हैं.
खाते हैं हम आज कसम,
हम हिन्दीमय हो जायेंगे.
राजभाषा हिन्दी को हम,
आगे और बढ़ायेंगे, विश्व में फैलायेंगे, परचम लहरायेगे.
आओ— सब मिल हिन्दी को, विश्व (जग) भाषा बनायें,
राजभाषा हिन्दी का हम, परचम लहरायें.

—केन्द्रीय जल आयोग
नयी दिल्ली—110 066

बादल काले–काले

–मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

काली–काली घटा निराली
फूट गई बादल की प्यारी,

टिप–टिप गिरतीं बूँदें छोटी–छोटी
और कभी–कभी गिरतीं मोटी–मोटी,

तड़–तड़–तड़ बिजली कड़के
लब–लबा–लब पानी से हो गई सड़कें,

टर्रम–टर्रा मचाते बरसाती मेंढ़क
भीग गया दादी माँ का ऐनक,

इन्द्रधनुष की छटा प्यारी–न्यारी
मोर–मोरनी नाचने की करते तैयारी,

घर्रम–घर्र मचायें रूद्र रूपिणी नदियाँ
धरती–बादल की मित्रता को हो गयी सदियाँ,

बादल काले–काले खूब बरसना
पर तुम तबाही वाली बाढ़ न लाना,

बरस–बरस समय से घर लौट जाना
अगले साल समय से वापिस फिर आ जाना,

– गाँव रिहावली, फतेहाबाद
आगरा, उत्तर प्रदेश

हिन्दी

–मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

जन–जन के कंठ समाई

पहचान अमिट बनाई

राष्ट्रभाषा हिंदी

भारत माँ के माथे की बिंदी

समरसता फैलाती

ज्ञान की अलख जगाती

हिंदी सबसे सुंदर–सरल

विश्वस्तर पर सीना तान खड़ी पीकर गरल

बाकी भाषायें सखी–सहेलीं

नहीं बुझाते हम पहेली

हिंदी अपनी रानी है

बड़ी संघर्ष भरी कहानी है

बापू की चहेती हिंदी

एकता का अमर सूत्र हिंदी

कष्मीर से कन्याकुमारी तक फैली

मैकालेपुत्र वेत चादर करो न मैली

रंग–रुप, ऊंच–नीच के सब भेद मिटाती

हृदय से हृदय के तार मिलाती

सरल–मधुर अपनी हिंदी

माँ भारती का श्रृंगार हिंदी

– गॉव रिहावली, फतेहाबाद
आगरा, उत्तर प्रदेश

मौसम

–अर्चना शर्मा

बारिश की बूँदों का आधार है मौसम
दिन और राम के बीच का बदलाव है मौसम
धूप–छाँव का मिलाप है मौसम
पत्तों के झड़ने का व्यवहार है मौसम

बारिश की बूँदों का आधार है मौसम
रात के चमकते चांद का सार है मौसम
सूखे दरख्तों पर नए पत्तों का आना है मौसम
सावन में कोयल की कूकने का आवाज है मौसम

बारिश की बूँदों का आधार है मौसम
बर्फ से ठंडी रातों का सार है मौसम
सर्दी में रजाई का गरम एहसास है मौसम
तपती धूप में तरसती प्यास का नाम है मौसम

बारिश की बूँदों का आधार है मौसम
बादलों से गिरती चमचमाती बूँदों का नाम है मौसम
धूप में गर्म हवाओं से लहराते पत्तों का नाम है मौसम
घास पर पड़ी मोती सी चमकती बूंदों का नाम है मौसम

बारिश की बूँदों का आधार है मौसम
बर्फ की चादर से ढकी नदियों और पहाड़ों का नाम है मौसम
ऋतोओं में होते हुए बदलाव का नाम है मौसम
बारिश की बूँदों का आधार है मौसम.

–के 6/42, डी.के. मोहन गार्डेन
राघव मेगा स्टोर, नवादा
नई दिल्ली–110059

जल का संचय

—कमल सिंह चौहान

चेहरे पर पानी हो तो मुस्कान बिखर जाती है,
धरती पर पानी हो तो हरियाली छा जाती है.
पेड़ पौधे जीव जन्तु सारी सृष्टि पानी पर ही चलती है,
पानी की कमी से सारी वसुधा व्याकुल हो जाती है.
चेहरे पर पानी हो तो मुस्कान बिखर जाती है.

पानी की कीमत जैसे सागर तल की गहराई हो,
पानी का अपव्यय जैसे मरूस्थल की खाई हो.
बून्द बून्द से सागर भरता हर बून्द के हिस्सेदार बनों,
हर पल रोको जल बंजर धरती की गोद हरी हो जाती है.
चेहरे पर पानी हो तो मुस्कान बिखर जाती है.

दरवाजे पर दस्तक देता सूखापन ना आ जाये,
हर चेहरे पर खुशियॉं हो मायूसी ना छा जाये.
यह सब संभव है अब जल को संचय करने से,
जल के संचय से वसुन्धरा आनंदित हो जाती है.
चेहरे पर पानी हो तो मुस्कान बिखर जाती है.

—कविता निवास
15, गोविन्द नगर वार्ड नं. 9
जसवाड़ी रोड़ खंडवा (म. प्र.)
450 001

निर्मल जल

– कमल सिंह चौहान

कल कल करती वसुधा पर नदी का निर्मल जल,
पर्यावरण प्रदुषण से बहती नहीं, सरिता अविरल.
घाट घाट पर कूड़ा करकट साफ करो इसको तन से,
जल की निर्मल धारा फिर बहती जाये अविरल.
कल कल करती वसुधा पर नदी का निर्मल जल,

भागीरथी यमुना नर्मदा वंदनीय है सरस्वती का तट,
पावन इनका जल है फिर खुलते है संस्कृति के पट.
आंधी हो तूफान जल वर्षा भरा आसमान हो,
धरती के तन पर श्रृंगार सजाता अब ये पावन जल.
कल कल करती वसुधा पर नदी का निर्मल जल,

प्यासों की प्यास बुझाते इन जल स्त्रोंतो का वंदन,
सारी सृष्टि इन पर आश्रित करते है अभिनंदन.
विक्षिप्त न हो पर्यावरण वरना जल स्तर गिरता है,
शुद्ध जल भरा लबालब खुशियों में बीते हर पल.
कल कल करती वसुधा पर नदी का निर्मल जल,

जल प्रभात फेरी

—कमलेश्वर प्रसाद त्रिपाठी

बूँद—बूँद अनमोल साथियों,
बूँद—बूँद अनमोल
जल बिन जीवन सारा सूना
बिन जल के तो कुछ ना होना
जल का मोल पहचानो साथियों
जल का मोल पहचानो
नमामि गंगे, नमामि गंगे, हर—हर गंगे बोलो

वर्षा जल को संचित कर लो
बूँद—बूँद को घट में भरलो
व्यर्थ न पानी जाये साथियों
व्यर्थ न पानी जाये
नमामि गंगे, नमामि गंगे, हर—हर गंगे बोलो

गंगा हमने मैली कर दी
कूड़े—कचरे से भर दी
निर्मल इसे बनायें साथियों
चलो—निर्मल इसे बनायें
नमामि गंगे, नमामि गंगे, हर—हर गंगे बोलो

जल—क्राँति हमें लानी होगी
ऐसी अलख जगानी होगी
घर—घर पानी लायें साथियों
घर—घर पानी लायें नमामि गंगे, नमामि गंगे, हर—हर गंगे बोलो

—केन्द्रीय जल आयोग
नयी दिल्ली—110 066

पानी

—कमलेश्वर प्रसाद त्रिपाठी

पानी पानी हो गया है देश मेरा, पानी की इन बूंदों सें
मेरे देश की दंकपलं भर गई है, नीरो की इन बूंदों सें
आवश्यकता ने आविष्कार किया, प्रकृति की इन गोदो में
खोज बदलती गई है स्टोरी के पन्नों में

पानी पानी हो गया देश मेरा, पानी की इन बूंदों सें
मेरे देश की नदियां भर गई है, नीरो की इन बूंदों सें
कोई हमें बतलाता है जलवायु बदलती है, ओजनों के इन छिद्रों सें
ग्लेशियर विलुप्त होते हैं इंसानों के इन कृत्यों सें

पानी पानी हो गया है देश मेरा पानी की इन बूंदों सें
मेरे देश की नदियां भर गई है नीरो की इन बूंदों सें

धू बदलती है पखवाड़ों में, सूरज की इन किरणों सें
बे मौसम बारिश होती है, हमारे घर की गलियों में
पानी पानी हो गया है, देश मेरा पानी की बूंदों सें
मेरे देश की नदियां भर गई है, नीरो की इन बूंदों सें
सूरज उदय होता है और सिहरता है, प्रकृति की गलियों में
सूरज की विवशता देखी, पराबैगनी किरणों में

पानी पानी हो गया है देश मेरा, पानी की इन बूंदों सें
मेरे देश की नदियां भर गई है, नीरो की इन बूंदों सें
साइंस–मैथ्स भूल जाओगे, भूगोल के अंधेरे में
अभी सुधर जाओ वरना, नीर ना होगा नैनों में

पानी पानी हो गया है देश मेरा, पानी की इन बूंदों सें
मेरे देश की नदियां भर गई है, निरोगी इन बूंदों से.

साभार

जल संसाधन संसद में

जल के अभाव संबंधी अभियान

श्रीमती रूपा गांगुली द्वारा उपर्युक्त विषय के संबंध में पूछे गए प्रश्न के प्रत्युत्तर में जल शक्ति और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री, श्री रतन लाल कटारिया द्वारा बताया गया किः

जल राज्य का विषय है, इसलिए देश के जल संसाधनों का संवर्धन, संरक्षण और प्रबंधन मुख्यतः संबंधित राज्य सरकारों द्वारा प्राथमिक रूप से किया जाता है. केन्द्र सरकार विभिन्न स्कीमों और कार्यक्रमों के माध्यम से राज्य सरकारों को तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान करके उनके प्रयासों में सहायता करती है.

जल शक्ति मंत्रालय ने जुलाई, 2019 में जल संरक्षण तथा जल सुरक्षा के लिए एक अभियान जल शक्ति अभियान शुरू किया था. अभियान के दौरान, जल संरक्षण और जल संसाधन प्रबंधन के लिए भारत सरकार के अधिकारियों, भूजल विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों ने राज्य तथा जिलों के अधिकारियों के साथ मिलकर भारत के सबसे अधिक जल की समस्या वाले जिलों में कार्य किया जिसमें कार्यान्वयन के 5 लक्षित कार्यों के त्वरित कार्यान्वयन पर ध्यान दिया गया नामतः जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन, पारंपरिक और अन्य जल निकायों/टैंकों का पुनरुद्धार, बोरबैल का पुनर्भरण और पुनः उपयोग, वाटरशेड विकास और सघन वृक्षारोपण शामिल हैं. इस अभियान से जागरूकता को व्यापक स्तर पर बढाया गया है और विभिन्न स्टेकहोल्डरों अर्थात् सरकारी विभागों, एजेंसियों, गैर–सरकारी संगठनों, अधिकारियों, पंचायतों, व्यक्तियों इत्यादि ने जल संरक्षण की दिशा में कदम उठाना शुरू कर दिया है.

राष्ट्रीय जल मिशन ने किसानों के लिए जल की दक्षता के साथ कम पानी वाली फसलें उगाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु सही फसल नाम से एक अभियान शुरू किया है. इस क्रम में राष्ट्रीय जल मिशन ने अमृतसर, दिल्ली, औरंगाबाद और कुरूक्षेत्र में विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन किया इस श्रृंखला में राष्ट्रीय जल मिशन, जल संरक्षण, भूजल से जुड़े मुद्दों और जल से संबंधित अन्य विषयों पर जन जागरूकता बढ़ाने के लिए 'जल चर्चा' नाम से एक श्रृंखला हर महीने के तीसरे शुक्रवार को नई दिल्ली में आयोजित करता रहा है.

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत कमान क्षेत्र विकास और जल प्रबंधन एक ऐसा कार्यक्रम है, जिसका मुख्य उद्देश्य सृजित सिंचाई क्षमता के उपयोग में बढोतरी करना और कृषि उत्पादकता को बढ़ाना है. सीएडीडब्ल्यूएम कार्यक्रम के गैर–संरचित कार्यकलापों का उद्देश्य नहर सिंचित कमान क्षेत्र में भागीदारी सिंचाई प्रबंधन को मजबूती प्रदान करना है. इसमें प्रशिक्षण और फील्ड प्रदर्शनों के माध्यम से जल प्रयोक्ता संघों के सृजन और उनकी क्षमता निर्माण की परिकल्पना की जाती है, जिससे कि सीएडीडब्लयूएम परिसंपत्तियों का नियंत्रण उनके अपने सतत प्रचालन और रख–रखाव के लिए किया जा सके. सफल पीआईएम संबंधी कार्यकलापों में यह आशाकी जाती है कि किसानों की मानसिकता में बदलाव आए जिससे कि वे जल के

कुशल प्रयोग, फसल चयन सहयोग और फसल की योजना तैयार कर सकें.

भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा जन भागीदारी के साथ भूजल के सतत प्रबंधन हेतु 6000 करोड़ रूपए की अटल भूजल योजना का शुभारंभ 25 दिसम्बर, 2019 को किया गया है. स्कीम की विभिन्न गतिविधियों में समुदायों की सक्रिय भागीदारी के साथ जल प्रयोक्ता संघों का सृजन, भूजल आंकड़ों की मॉनीटरिंग और प्रचार, जल बजटिंग, ग्राम पंचायत–वार जल सुरक्षा योजनाओं इत्यादि का कार्यान्वयन और तैयारी की परिकल्पना की जाती है.

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत जल निकायों की मरम्मत, नवीकरण एवं पुनरूद्धार योजना का कार्यान्वयन जल शक्ति मंत्रालय द्वारा जल निकायों के व्यापक सुधार और पुररूद्धार जैसे लक्ष्यों के साथ किया जा रहा है, जिसके द्वारा टैंक भंडारण क्षमता, भूजल पुनर्भरण, पेयजल की बढ़ती उपलब्धता इत्यादि हासिल होती है.

केन्द्रीय जल आयोग, देश के 123 जलाशयों की सक्रिय भंडारण स्थिति को साप्ताहिक आधार पर मॉनीटर करता है और प्रत्येक गुरूवार को एक साप्ताहिक बुलेटिन जारी करता है. साप्ताहिक बुलेटिन, संबंधित राज्यों के जल संसाधन विभागों, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के फसल मौसम निगरानी समूह के साथ साझा की जाती है. जब कभी भी केन्द्रीय जल आयोग द्वारा जलाशयों के मौजूदा भंडारण की निगरानी ऐसे राज्य में की जाती है, जहां राज्य सामान्य से 80 प्रतिशत (पिछले 10 सालों का औसत भंडारण) संबंधित राज्य सरकारों को उपलब्ध जल के विवेकपूर्ण प्रयोग के लिए दिशा –निर्देश जारी किए जाते हैं.

नदी क्षेत्रों में भू–संरक्षण

श्री अब्दुल खालेक द्वारा उपर्युक्त विषय के संबंध में पूछे गए प्रश्न के प्रत्युत्तर में जल शक्ति और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री, श्री रतन लाल कटारिया द्वारा बताया गया किः

सरकार विभिन्न नदियों द्वारा कटाव की वजह से असम के बारपेटा जिले में नदी के भूमि के टुकड़ों की हानि से संबंधित तथ्य से अवगत है. नदी का कटाव और जमाव प्राकृतिक प्रक्रिया है. सीडब्ल्यूसी ने आई आईटी, गुवाहाटी को रिमोट सेंसिंग प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके ब्रह्मपुत्र नदी के बाएं तट पर 26.31 वर्ग किलोमीटर का कटाव और 2.5 वर्ग कि.मी. का जमाव हुआ है और इसी तह ब्रह्मपुत्र नदी के दाएं तट पर 1973–74 से 2016–17 की अवधि में बीच आईआईटी, गुवाहाटी द्वारा 418.39 वर्ग कि.मी. का कटाव आंकलित किया गया है.

कटाव नियंत्रण सहित बाढ़ प्रबंधन का विषय राज्यों के क्षेत्राधिकार में आता है. बाढ़ प्रबंधन और कटावरोधी स्कीमों का आयोजन, जांच और कार्यान्वयन राज्य सरकारों द्वारा राज्य में प्राथमिकता के आधार पर अपने संसाधनों से किया जाता है. तथापि संघ सरकार तकनीकी, वित्तीय, सलाहकार, कैटालिटिक और संवर्धनात्मक रूप में राज्यों को सहायता देती है.

जल संसाधन विभाग, असम ने आवश्यक सर्वेक्षण करने के पश्चात् राज्य सरकार के उपलब्ध संसाधनों से तथा एसडीआरएफ और नाबार्ड निधियन के तहत भी स्थल अपेक्षा के अनुसार बारपेटा जिला के तहत विभिन्न स्थानों पर अनेक कटावरोधी/चैनलीकरण/भूमि वापस लेने संबंधी उपाय किए. जल संसाधन विभाग, असम ने उन नदियों की परम्परागत विशिष्टता के संरक्षण के लिए कटाव रोधन, चैनलीकरण/भूमि वापस लेने संबंधी उपाय किए. जल संसाधन विभाग, असम ने उन नदियों की परम्परागत विशिष्टता के संरक्षण के लिए कटाव रोधन, चैनलीकरण/भूमि वापस लेने संबंधी उपायों

के लिए बहुत सी स्कीमें भी शुरू की हैं और बहुत सी नई स्कीमें तैयार की हैं.

गंगा नदी में बाढ़

श्री मलूक नागर द्वारा उपर्युक्त विषय के संबंध में पूछे गए प्रश्न के प्रत्युत्तर में जल शक्ति और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री, श्री रतन लाल कटारिया द्वारा बताया गया कि कटाव नियंत्रण सहित बाढ़ प्रबंधन राज्यों के क्षेत्राधिकार में आता है. बाढ़ प्रबंधन और कटावरोधी स्कीमों का आयोजन, जांच और कार्यान्वयन राज्य सरकारो द्वारा राज्य में प्राथमिकता के अनुसार अपने संसाधनों के साथ किया जाता है. संघ सरकार राज्यों को केवल सहायता प्रदान करती है जोकि तकनीकी, सलाहकार, कैटालाइटिक और प्रोत्साहनात्मक स्वरूप की होती हैं. उत्तर प्रदेश राज्य सरकार ने सूचित किया है कि उत्तर प्रदेश के विजनौर जिले में गंगा नदी के बांये तट पर स्थित गौशपुर, सुखापुर, कुंदनपुर, मिर्जापुर, सिमली, राजारामपुर, रघुनाथपुर, इत्यादि गांव की सुरक्षा के लिए बाढ़ नियंत्रण और कटावरोधी स्कीमें 6113.80 लाख रूपए की अनुमानित लागत से राज्य सरकार द्वारा परिकल्पित की गई है.

अगस्त, 1980 में तत्कालीन सिंचाई मंत्रालय (अब जल शक्ति मंत्रालय) ने अंतर बेसिन जल अंतरण के जरिए जल संसाधनों के विकास हेतु राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना तैयार की थी, जिसका उद्देश्य जल की अधिकता वाले बेसिनों से जल की कमी वाले बेसिनो में जल अंतरण करना है. एनपीपी के अंतर्गत, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण साध्यता रिपोर्ट तैयार करने हेतु 30 नदी जोड़ों (प्रायद्वीपीय घटक के तहत 16 तथा हिमालयी घटक के तहत 14) की पहचान की है. इन सभी 30 नदी जोड़ों की पूर्व साध्यता रिपोर्ट पूरी हो चुकी हैं और पक्षकार राज्यों को परिचालित कर दी गई हैं. प्रायद्वीपीय घटक के तहत 14 नदी जोड़ों और हिमालयी घटक के तहत 2 नदी जोड़ों की साध्यता रिपोर्ट तैयार हो गई हैं. एन पी पी के तहत, प्राद्वीपीय नदी घटक अर्थात केन–बेतवा नदी जोड़ परियोजना, दमनगंगा–पिंजाल नदी जोड़ परियोजना, पार–तापी–नर्मदा नदी जोड़ परियोजना और गोदावरी–कावेरी नदी जोड़ परियोजना के तहत विस्तृत परियोजना रिपोर्टें पूरी कर ली गई है और संबंधित राज्यों को भेज दी गई है.

इसके अतिरिक्त, तीन लिंकों अर्थात गोदावरी (इंचमपल्ली/जनमपेट)–कृष्णा (नागार्जुन सागर), कृष्णा(नागार्जुनागर)– पेन्नार (सोमासिला)–कावेरी (ग्रैंड एनीकट) नदी जोड़ परियोजनाओं को शामिल करते हुए गोदावरी–कावेरी नदी जोड़ परियोजना की डीपीआर का मसौदा पूरा कर लिया गया है और पक्षकार राज्यों को मार्च, 2019 में परिचालित कर दिया गया है.

सरकार ने अंतर नदी जोड़ कार्यक्रम को परामर्शी ढंग से शुरू किया है और इसे उच्च प्राथमिकता दी है. राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के कार्यान्वयन से बाढ़ नियंत्रण के आनुषंगिक लाभ, सूखे को समाप्त करने, नौवहन, जलापूर्ति, मतस्यपालन, लवणता और प्रदूषण नियंत्रण इत्यादि के अतिरिक्त सतह जल से 25 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र की सिंचाई का लाभ, भूजल के प्रयोग को बढ़ाकर 10 मिलियन हेक्टेयर करने का लाभ, चरम सिंचाई क्षमता को 140 मिलियन हेक्टेयर से बढ़ा कर 175 मिलियन हेक्टेयर तक करने और विद्युत के 34 मिलियन किलो वाट के सृजन का लाभ प्राप्त होगा.

पानी की खपत

श्री पंकज चौधरी द्वारा उपर्युक्त विषय के संबंध में पूछे गए प्रश्न के प्रत्युत्तर में जल शक्ति और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री, श्री रतन लाल कटारिया द्वारा बताया गया कि जल, राज्य का विषय है इसलिए राज्य सरकारें अपनी प्राथमिकताओं और आवश्यकताओं के अनुसार सिंचाई सहित विभिन्न

उद्देश्यो के लिए जल का आवंटन और आपूर्ति करती हैं. सिंचाई के लिए जल की आवश्यकता और जलापूर्ति के आंकड़ों को वार्षिक आधार पर नहीं रखा जाता है. उपयोग योग्य जल 1122 बिलियन क्यूबिक मीटर (बीसीएम) होने का अनुमान लगाया गया है, जिसमें सतह जल के 690 बीसीएम और 432 बीसीएम पुनर्भरण योग्य भूजल संसाधन शामिल हैं. इसके अलावा, यह भी अनुमान लगाया गया है कि 699 बीसीएम जल (450 बीसीएम सतही और 249 बीसीएम भूजल सहित) का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा रहा है. इसके अतिरिक्त, बारहवीं पंचवर्षी योजना (2012–17) के दस्तावेज से पता चलता है कि भारत के कृषि क्षेत्र में उपलब्ध जल संसाधनों का लगभग 80 प्रतिशत उपयोग होता है.

भारत सरकार ने राज्यों की साझेदारी से जल जीव मिशन (जेजेएम) की शुरूआत की है जिससे देश के प्रत्येक घर को 2024 तक कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन के माध्यम से सेवा स्तर पर 55 लीटर प्रति व्यक्ति प्रति दिन पेयजल उपलब्ध हो सके.

आवासन एवं और शहरी कार्य मंत्रालय ने 500 शहरों में अटल नवीकरण और शहरी परिवर्तन (अमृत) के मिशन घटकों जैसे जल आपूर्ति, तूफान क`जल के निकासी आदि घटकों के साथ लागू कर रहा है. पेय जल क्षेत्र की समस्या को कम करने के लिए अन्य बातों के साथ–साथ, जल आपूर्ति घटक, जल शोधन संयंत्रों और जल निकायों के पुनरूद्धार सहित पुराना जल आपूर्ति प्रणालियों की पूर्नबहाली का प्रावधान करता है, विशेष रूप से पेयजल आपूर्ति और भूजल पुनर्भरण के लिए.

सिंचाई परियोजनाओं की योजना, वित्त पोषित, निष्पादन और उनका रखरखाव राज्य सरकारों द्वारा उनके अपने संसाधनों और प्राथमिकता के अनुसार किया जाता है. भारत सरकार विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रम के माध्यम से जल संसाधनों के सतत विकास और कुशल प्रबंधन को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकारों को तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान करके उनके प्रयासों को पूरा करती है. प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत खेत पर पानी की वास्तविक पहुंच बढ़ाने और सुनिश्चित सिंचाई के तहत खेती योग्य क्षेत्र के विस्तार करने, कृषि जल अपयोग दक्षता में सुधार, स्थायी जल संरक्षण प्रणालियों आदि का कार्यान्वयन किया जा रहा है. पीएमकेएसवाई के त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम घटक के तहत 99 प्राथमिकता वाली परियोजनाओं में से 40 परियोजनाओं के पूरा/लगभग पूरा होने की सूचना दी गई है. इसक`अलावा एक नई योजना, सिंचाई अंतराल को कम करने के लिए प्रोत्साहन योजना को पांच वर्षों में 24 राज्यों की 317 परियोजनाओं में कमान क्षेत्र विकास और जल प्रबंधन कार्यों को पूरा करने की परिकल्पना की गई है.

पानी के पारंपरिक स्रोतों की तर्ज पर जलाशय

श्री रामकुमार वर्मा द्वारा उपर्युक्त विषय के संबंध में पूछे गए प्रश्न के प्रत्युत्तर में जल शक्ति और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री, श्री रतन लाल कटारिया द्वारा बताया गया कि जल संसाधन परियोजनाएं राज्यों द्वारा उनकी अपनी प्राथमिकता एवं संसाधन के अनुसार नियोजित, तित्तपोषित, कार्यान्वित एवं अनुरक्षित होती है. भारत सरकार विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों के माध्यम से जल संसाधनों के स्थायी विकास एवं प्रभावी प्रबंधन को बढ़ावा देने हेतु राज्य सरकारों को तकनीकी एवं वित्तीय सहयोग प्रदान करती है जिससे प्रयासों को पूर्ण कर सके.

जलवायु परिवर्तन और जल संदूषण

जलवायु परिवर्तन संबंधी अंतर–सरकारी पैनल सहित विभिन्न अभिकरणों द्वारा किए गए जलवायु मॉडल निर्धारण अध्ययन मौसम से संबंधी घटनाओं की बारंबारता और गहनता के साथ जल परिवर्तन के संभव संपर्कों को दर्शाते हैं. तथापि, जलवायु परिवर्तन तथा बाढ़ के बीच किसी भी तरह के प्रत्यक्ष संपर्कों से जल के संदूषित होने को स्थापित नहीं किया गया है.

नदियों में प्रवाह डायनिमिक है और यह वर्षापात, आवाह क्षेत्र में इसके वितरण और सघनता, कैचमेंट विशेषताओं और जल बेसिनों से जल निकासी/उसके उपयोग जैसे बहुत से पैरामीटरों पर निर्भर करता है. केन्द्रीय जल आयोग, जल शक्ति मंत्रालय महत्वपूर्ण मुख्य नदियों को मॉनीटर करता है. बड़ी नदियों के टर्मिनल स्थलों के पिछले 20 सालों के वार्षिक औसत बहाव को ध्यान में रखते हुए बिहार राज्य सहित देश में कुल जल की उपलब्धता में पर्याप्त वृद्धि/घटाव की प्रवृत्ति नहीं पाई गई है.

जल शक्ति मंत्रालय ने जल क्षेत्र में सुधार लाने के लिए ''भूजल का विकास और प्रबंधन का विनियमन और नियंत्रण करने'' के लिए राष्ट्रीय जल ढांचा विधेयक, नदी बेसिन प्रबंधन विधेयक और मॉडल विधेयक नामक विधेयकों का प्रारूप तैयार किया है.

प्रारूप आरबीएम विधेयक में अंतर्राज्य समन्वय को सुगम बनाकर अंतर्राज्य नदिया के इष्टतम विकास का प्रस्ताव है जिससे जल का सभी रूपों (मृदा नमी, भू और सतह जल सहित) में एकीकृत परिप्रेक्ष्यों के साथ यूनिट के रूप में बेसिन/उपबेसिन को ध्यान में रखते हुए भूमि और जल संसाधन की वैज्ञानिक आयोजना सुनिश्चित हो सके. प्रारूप आरबीएम विधेयक पूर्व–विधायी परामर्शों हेतु सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों, संबंधित केन्द्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों को परिचालित कर दिया गया है.

मंत्रालय ने सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को ''भूजल का विकास और प्रबंधन का विनियमन और नियंत्रण'' संबंधी मॉडल विधयक भी परिचालित कर दिया है. ताकि, वे इसके विकास के लिए विनियमन हेतु उचित भूजल विधान अधिनियमित कर सकें, जिसमें वर्षा जल संचयन का प्रावधान शामिल है. अभी तक, मॉडल विधेयक की तर्ज पर भूजल विधान को 15 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों न अपना लिया है/कार्यान्वित कर दिया है.

–सौजन्य, संसद अनुभाग

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षाण मंत्रालय, नयी दिल्ली

समाचार पत्र/पत्रिकाओं की घोषणा–प्रपत्र–4 (नियम–8) के अंतर्गत

समाचार पत्र/पत्रिकाओं के पंजीयन अधिनियम के अंतर्गत अपेक्षित 'भगीरथ' (हिंदी) पत्रिका से संबंधित स्वामित्व और अन्य तथ्यों का विवरणः–

1.	प्रकाशन का स्थान	:	सेवा भवन, रामकृष्णपुरम्, नयी दिल्ली –110 066
2.	प्रकाशन की अवधि	:	त्रैमासिक
3.	मुद्रक का नाम व पता	:	आउटसोर्सिंग
4.	प्रकाशक का नाम व पता	:	जल प्रणाली अभियांत्रिकी निदेशालय, केंद्रीय जल आयोग, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण, मंत्रालय, भारत सरकार, द्वितीय तल, सेवा भवन, रामकृष्णपुरम्, नयीदिल्ली–110066, ई–मेलः media-cwc@gov.in
5.	क्या भारतीय नागरिक हैं?	:	भारतीय नागरिक
6.	संपादक का नाम व पता	:	श्री ए. के. मधोक, कार्यकारी संपादक, जल प्रणाली अभियांत्रिकी निदेशालय, केंद्रीय जल आयोग, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, भारत सरकार, द्वितीय तल (द0) सेवा भवन, रामकृष्णपुरम्, नयी दिल्ली–110066 ई–मेलः media-cwc@gov.in
7.	क्या भारतीय नागरिक हैं?	:	भारतीय नागरिक
8.	उन व्यक्तियों/संस्था के नाम और पते जो समाचार पत्र/पत्रिका के मालिक हैं और कुल प्रदत्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार या भागीदार हैं.	:	भारत सरकार का प्रकाशन

लेखकों के लिए जानकारी

''भगीरथ'' पत्रिका के लिए लेख, कविताएं तथा अन्य प्रकाशनार्थ सामग्री भेजते समय कृपया निम्न बातों का ध्यान रखने का अनुरोध है ताकि पत्रिका में प्रकाशन हेतु भेजी गई सामग्री उपयुक्त पाई जाए:–

1 रचनाएं मौलिक और अप्रकाशित हों, उसमें दी गई जानकारी अद्यतन हो तथा प्रस्तुति भी रोचक हो. पहले से ही प्रकाशित रचना जो किसी दिलचस्प एवं महत्वपूर्ण समाचार के अतिरिक्त हो, स्वीकार नहीं किया जाएगा. (इस संदर्भ में लेखक मौलिकता का प्रमाण–पत्र अवश्य संलग्न करें)

2 रचना के विषय जल संसाधन विकास, नदी–घाटी परियोजनाएं, पर्यावरण, कृषि, बाढ़ प्रबंधन तथा इससे संबंधित हो सकते हैं. विज्ञान के लोकोपयोगी पहलुओं पर भी संक्षिप्त जानकारी भेजी जा सकती है.

3. विषय प्रतिपादन में उपशीर्षकों का प्रयोग किया जाना अपेक्षित है. रचनाओं में विशिष्ट तकनीकी शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए. जहां उनका प्रयोग अपरिहार्य हो वहां ऐसी शैली का प्रयोग किया जाए जिससे अर्थ पाठक को स्पष्ट हो जाए अथवा अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है.

4. रचनाएं सी डी द्वारा तथा ई–मेलः media-cwc@gov.in पर भेजी जा सकती हैं. चित्र आदि स्कैन करके भी ई–मेल से भेजे जा सकते हैं. डाक द्वारा भेजी जाने वाली रचनाएं 2 प्रतियों में होनी चाहिए.

5. रचना से संबंधित छायाचित्र, रेखाचित्र एवं नक्शे रंगीन तथा श्वेत–श्याम होने चाहिए. लिखे हुए शब्दों का आकार बड़ा तथा स्पष्ट होना चाहिए एवं आर्ट वर्क संलग्न होना चाहिए. चित्रों, रेखाचित्रों, नक्शों आदि को मूलरूप में तथा स्पष्ट भेजा जाए ताकि सामान्य पाठक की समझ में आ जाए.

6. विद्वत लेखकों एवं लेखिकाओं को भेजी जा रही सामग्री की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लेना चाहिए क्योंकि अप्रकाशित रचनाओं को उन्हीं लेखकों को वापिस भेजा जाएगा जिनकी रचनाओं के साथ पूरा पता आदि लिखा एवं समुचित टिकट लगा लिफाफा संलग्न होता है.

7. संपादक मंडल से अनुमोदन उपरांत रचनाएं प्रकाशित की जाती है अतः लेखकों से अनुरोध है कि वे रचनाओं के प्रकाशन के संबंध में किसी प्रकार का पत्र व्यवहार न करें.

8. प्रकाशित रचनाओं के लेखकों को संबंघित अंक की एक प्रति स्वतः ही भेज दी जाती है, 'भगीरथ' हिंदी पत्रिका के प्रकाशित सभी अंको को प्राप्त करने हेतु इसकी सदस्यता लेने का आग्रह है.

संपादकीय पत्र व्यवहार का पताः

जल प्रणाली अभियांत्रिकी निदेशालय
केन्द्रीय जल आयोग
सेवा भवन, द्वितीय तल, रामकृष्णपुरम
नई दिल्ली– 110066
दूरभाष– 011–29583520
ई–मेलः media-cwc@gov.in

पंजीकरण संख्या : RN 28528/74

जल है तो कल है

बूँद - बूँद से घर भर लो
वर्षा जल को संचित कर लो

जल प्रणाली अभियांत्रिकी निदेशालय , केंद्रीय जल आयोग,
राम कृष्ण पुरम , नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित